जहाज मंदिर
14वीं वर्षगांठ

मेला
13 फरवरी 2014
को

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला का मासिक मुख-पत्र

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म.सा.

▪ वर्ष : 10 ▪ ▪ अंक : 10 ▪ ▪ 5 जनवरी : 2014 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

अनुक्रमणिका

1.	नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	04
2.	गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
3.	प्रीत की रीत	डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	07
4.	ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	09
8.	श्रमण चिन्तन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	11
5.	मेरे बारे में मेरी अनुभूति	डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	14
9.	तत्त्वावबोध	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	17
4.	जिज्ञासा	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	19
9.	संयम अभिनंदन गीतिका		20
9.	मेले के लाभार्थी		21
10.	पंचांग : फरवरी माह	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	26
11.	समाचार दर्शन	संकलन	28
12.	जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-93	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	43
13.	जहाज मंदिर पहेली 90 का उत्तर		45
13.	जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	50

आगम मंजूषा

परमात्मा महावीर

क्रिया का उतना महत्व नहीं है जितनी मानसिक शुद्धता का महत्व है। मानस शुद्ध और पवित्र होना चाहिए। मन की शुद्धि से क्षणमात्र में काया का शुद्धिकरण हो सकता है। परमात्मा की वाणी कहती है-

जं जं समयं जीवो, आविसइ जेण जेण भावेण।
सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं॥

(उपदेशमाला)

जिस समय जीव जैसे-जैसे भाव करता है, उस समय वैसे ही शुभ-अशुभ कर्मों का बन्ध होता है। भटके हुए प्राणी पलक झपकते ही क्या से क्या बन जाते हैं? मानसिक विचारधारा पवित्र बनी नहीं कि कर्म खण्ड-खण्ड, टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाते हैं।

मरडिया परिवार आयोजित
श्री चितलवाना से श्री शंखेश्वर तीर्थ
छरि पालित संघ प्रयाण दि. 21-01-14
संघ माला दि. 05-02-14

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 10 अंक : 10 5 जनवरी 2014 मूल्य 20 रू.

संयोजन : आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.
अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया
महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ रंगीन	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ रंगीन	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ रंगीन	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	: 7,000 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

मन का खेल

हमारी जिन्दगी का अधिकतर समय केवल और केवल प्रतीक्षा में बीतता है। दिन में हम रात की प्रतीक्षा करते हैं। और रात होने पर दिन की प्रतीक्षा में रात गुजार देते हैं।

न दिन को अच्छी तरह देख पाते हैं... न रात को!

यह खेल मन का है। वह वहाँ रहना नहीं चाहता, जहाँ होता है। वह सदा आगे पीछे, दांयें बांयें, इधर उधर, ऊपर नीचे झांकता रहता है। उसे सीधी नजर में कोई रस नहीं होता।

घर में कोई उत्सव होने वाला हो, तो उस उत्सव के काल्पनिक सपने ही दिमाग में तैरते रहते हैं। और यह तो तय है कि यथार्थ उत्सव से काल्पनिक उत्सव बहुत सुहाना और आकर्षक होता है। क्योंकि काल्पनिक सपने पर आपकी अपनी पकड होती है। वह उसे मनचाही दिशा में बहा सकता है... मोड सकता है।

वह काल्पनिक दृश्य भी खडे कर लेता है, काल्पनिक संवाद भी तैयार कर लेता है। सामने वाला क्या बोलेगा, यह भी वही तय करता है, और स्वयं क्या जवाब देगा, यह भी वही तय करता है। क्योंकि वहाँ कोई उसे रोकने वाला या टोकने वाला नहीं है।

यथार्थ में ऐसा नहीं होता। यथार्थ में सामने वाला क्या बोलेगा, यह सामने वाला तय करता है। तुम क्या बोलोगे, यही तुम्हें तय करना होता है। वह भी तब जब तुममें विवेक और धीरज हो तथा परिणाम पर नजर हो। अन्यथा अधिकतर तो ऐसा होता है कि तुम क्या बोलोगे, यह भी सामने वाला ही तय करता है। क्योंकि तुम्हें तो जवाब देना है और जवाब हमेशा प्रश्न के अनुसार दिया जाता है। प्रश्न की भाषा और प्रश्न की टोन तुम्हारे दिल दिमाग पर इतनी हावी हो जाती है कि तुम स्वयं अपनी भाषा, अपनी टोन भूल जाते हो।

मन ऐसा करके मन को ही प्रभावहीन बनाता है। मन का यह कार्य मन का ही विरोधी है। तभी तो मन दुखी होता है। हो सकता है, प्रतीक्षा करने के क्षण सुखमय हो, पर परिणाम तो दुखदायी ही होता है।

मन के इस नुकसान करने वाले खेल को समझ कर मन की दिशा को बदल देना है।

गुरुदेव की कहानियाँ

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

और दीया जल उठा

(गतांक से आगे)

अगर इन्द्रदत्त पंडित अथवा श्रेष्ठी के सुनने में यह सारी विगत आ जाय तो...

उसे अपने कुकृत्यों पर गहरा पश्चात्ताप होने लगा। उन्हें मुनि महाराज याद आ गए। उनका निर्मल, शांत निरालम्ब जीवन याद आ गया। ओह! यही तो जीवन का सार है, मैं भी मुनि बनूंगा। और उसने उसी समय अपने ही हाथों अपना पंचमुष्टि लोच कर लिया। मुनिवेश धारण वह राजा प्रसेनजित की राज्यसभा में पहुँचा।

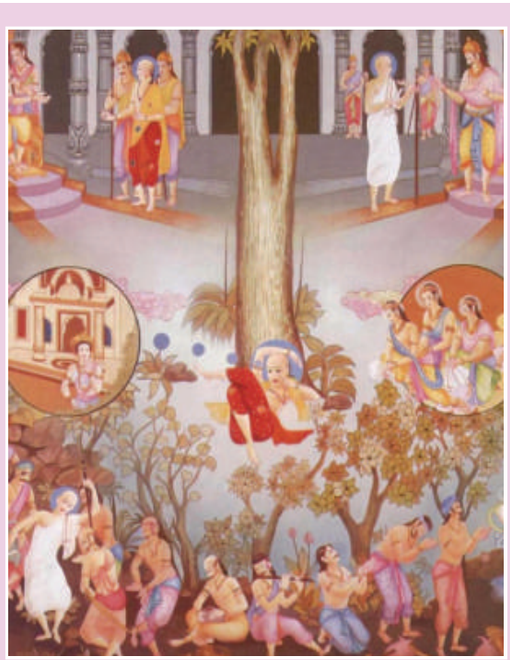

राजा प्रसेनजित की नजरें ज्योंही मुनि कपिल पर पड़ी वे हक्के-बक्के रह गये। कपिल मुनि ने कहा-

यथा लाभस्तथा लोभो,
लाभाल्लोभः प्रवर्धते।
माषद्वयाश्रितं कार्य,
कोट्यपि न हि
निष्ठितम्।।

राजन्! जहाँ लाभ है वहाँ लोभ है। ज्यों-ज्यों लाभ बढ़ता है त्यों-त्यों लोभ बढ़ता जाता है। दो स्वर्णमुद्रा से मेरी आकांक्षा प्रारम्भ हुई थी वह करोड़ों पर आकर भी अटकी नहीं।

राजन्! अब मुझे किसी धन की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मेरे अन्दर में रहा सन्तोष धन प्रकट हो चुका है।

कपिल मुनि समस्त सभा को धर्मलाभ देकर जंगलों में चले गये।

मुनि उग्र आराधना में लीन हो गये। छः माह पश्चात् ही उन्होंने केवलज्ञान की प्राप्ति कर ली।

एक अटवी में पाँच सौ चोर रहते थे। वे गाँवों-शहरों में लूटते और पुनः अटवी में प्रवेश कर जाते। केवलज्ञानी कपिल मुनि पर ज्योंही उनकी दृष्टि पड़ी, उन्होंने कहा हम आपको क्या लूटें क्योंकि आपके पास तो कुछ भी नहीं है अतः आप कोई अच्छा-सा नृत्य करके सभी का मनोरंजन करो।

लाभ जानकार मुनि ने वहाँ कुछ ध्रुवपदों की रचना कर नृत्य के साथ उन्हें प्रस्तुत किया।

चोरों की आत्मा सरल थी। ध्रुवपदों के अर्थ का चिन्तन करते-करते वे भी प्रतिबुद्ध हुए और उन्होंने अपने आपको कपिल केवली के चरणों में समर्पित कर दिया।

प्रीत की रीत

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्री सुमतिनाथ स्तवन

वस्तु निज परिणते सर्व परिणामिकी,
एटले कोई प्रभुता न पामे।
करे जाणे रमे अनुभवे ते प्रभु,
तत्व स्वामित्व शुचि तत्व धामे, अहो.॥५॥

वस्तु का परिणमन स्व में और पर में होता रहता है। पर मात्र परिणमन के कारण उन्हें ईश्वर अथवा महान् नहीं कह सकते। परंतु जो स्वाधीन होकर स्वयं में रमण करता है, स्वयं अनुभव करता है, वस्तु स्वभाव स्वामी होता है, वही शुद्धता का अद्वितीय अखंड धाम का प्रभु या परमेश्वर होता है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी ने प्रभु के परिचायक गुणों की व्याख्या की है। परिणमन तो चूंकि वस्तु का स्वभाव होता है, अतः जो भी वस्तु या द्रव्य है वह चाहे जड हो या चेतन, परिणमन करना तो उनका स्वभाव है पर मात्र परिणमन करने से प्रभु नहीं हो जाता। परमात्मा अथवा प्रभु उन्हें कहते हैं कि उनमें जो भी परिणमन होगा, वह स्वाधीन होगा। कर्मों की पराधीनता का शिकंजा उन पर नहीं कसा जाएगा। उनकी समस्त क्रियाएं स्वाधीन है। बडे से बड़ा सम्राट भी प्रभु नहीं हो सकता क्योंकि उसका साम्राज्य भी पुण्योदय का परिणाम है। उदय चाहे पुण्य का हो या पाप का, वह सारा बंधन है। परमात्मा का न पुण्योदय है न पापोदय! पुण्य और पाप दोनों का क्षय ही उन्हें प्रभुता की ओर अग्रसर करता है। उन्हें अपने स्थान अथवा अपने आनंद से कोई विचलित नहीं कर सकता। वे संपूर्ण स्वतंत्र है और इसीलिए वे प्रभु हैं।

जीव नवि पुद्गलो नैव पुद्गल कदा,
पुग्गलाधार नहीं तास रंगी।
पर तणो ईश नहीं अपर ऐश्वर्यता,
वस्तु धर्मे कदा न परसंगी, अहो० ॥६॥

जीव पुद्गल नहीं है और पुद्गल जीव नहीं है। चेतना न पुद्गल का आधार है और न पुद्गल का अनुरागी है। परभावों का यह स्वामी भी नहीं है और न जीव का ऐश्वर्य इन परपदार्थों के कारण है। वस्तु स्वरूप से चेतना परभावों का संगी भी नहीं है।

प्रस्तुत कडियों में श्रीमद्जी ने चेतना के वास्तविक स्वरूप को विश्लेषित किया है। जीव और शरीर अनादिकाल से संगी साथी है। अधिकतर तो ऐसा ही हुआ है कि चेतना ने शरीर को ही 'मैं' के रूप में स्वीकार किया है। शरीर के परकोटों में कैद होकर यद्यपि चेतना शरीर में आत्मबोध करना प्रारंभ कर लेती है फिर भी स्वभाव दशा जगते ही उसे ज्ञात हो जाता है कि मैं मात्र शुद्ध चेतना हूँ। अगर जीव पुद्गल बनता तो आज तक चेतना का अस्तित्व ही नहीं रहता पर यह कल्पना भी असत् है। चूंकि साधना के द्वारा दोनों को भिन्न किया जाना संभव है तो आधार और आधेय का स्थायित्व भी संभव नहीं है। जीव में पुद्गल का अभाव और पुद्गल में जीव का अभाव हो सकता है। जीव के ऐश्वर्य का कारण पुद्गल इसलिए नहीं होता कि दोनों का स्वभाव भिन्न है। जीव का ऐश्वर्य ज्ञान, दर्शन और चारित्र है जिनका कभी विनाश नहीं होता जबकि पुद्गल का स्वभाव विनाशी है। चेतना का ऐश्वर्य ऐसा है कि जिसे कोई छीन नहीं सकता और जिसके समक्ष तीनों लोकों की लौकिक

संपदा भी आंशिक ही होती है।

संग्रहे नहीं आपे नहीं परभणी,
नवि करे आदरे न पर राखे।
शुद्ध स्याद्वाद निज भाव भोगी जिके,
तेह परभाव ने केम चाखे, अहो०॥७॥

आप परपदार्थों का संग्रह करते नहीं। अन्य किसी को वह प्रदान करते नहीं। न परवस्तुओं का सम्मान करते हैं न उन्हें अपने निकट आने देते हैं। जो शुद्ध स्याद्वाद युक्त निज भावों के भोक्ता मात्र है, वह परभाव को ग्रहण कर भी कैसे सकता है।

प्रस्तुत पद्य में श्रीमद्जी ने परमात्मा की दिव्य चेतना का उल्लेख किया है। इसमें परमात्मा की परत्व भावों से नि: स्पृहता अभिव्यक्त हुई है। परत्व भावों से नि:स्पृहता असंभव नहीं पर कष्ट साध्य जरूर है। परभावों से आसक्ति भाव को त्यागा जा सकता है। पर प्रश्न उठता है कैसे?परभावों की चंचलता से हटकर हर चेतना शाश्वत आनंद को उपलब्ध होना चाहती है। पर चाहत रखना भिन्न है और उस चाहत की दिशा में प्रस्थित होना भिन्न है। कुछ उपायों का विवेचन अध्यात्म को प्राप्त महापुरूषों ने किया है। उनमें से एक है- मूर्त अर्थात् स्थूल से आसक्ति को हटाकर अमूर्त अर्थात् सूक्ष्म में स्थापित करना। कांटे को कांटे से निकालना संभव है। बडा आकर्षण छोटे आकर्षण से मुक्त करता ही है। शरणागति की स्वीकृति भी हमें आत्मकेन्द्रित करने में सहायक बनती है। स्मरण, दर्शन, उनकी वाणी के प्रति अनुराग, उन्हें पाने की उत्कट अभिलाषा आदि अनेक उपाय है, जो परभावों से मुक्त होने में हमारी मदद करते हैं।

जब जब हमारी चेतना नाभिकमल को छोड़ अन्यत्र लीन रहती है तब तब हमारी वृत्तियाँ मलीन होकर परभावों के संग्रह में मस्त हो जाती है। जब चेतना नाभि-केन्द्र में स्थापित हो जाती है तो उसकी प्रवृत्ति अपने प्रति बढ जाती है। अपने अंतर में असीम आनंद का कोष है। एक बार जो अपनी चेतना को अंतर में उतार देता है, वह उसके बाद कभी बाहर में नहीं उलझता। जब आदमी अपने भीतर प्रविष्ट हो जाता है तो बाद में उसके समक्ष नयी दिशा, नये अनुभव उद्घाटित हो जाते हैं। स्वयं में रमे बिना आत्मा का अक्षय कोष उपलब्ध नहीं हो सकता। चेतना स्वत: यह अनुभव करे कि मैं चेतन हूँ, ये सारे पदार्थ अचेतन और अशाश्वत है। अत: इनसे मिलने वाला आनंद भी क्षणिक है। जब यह चिंतन अनुभव में उतर जाता है तो अध्यात्म-चेतना जाग जाती है। फिर बाह्य जगत तो रहता है पर उससे चेतना में किसी प्रकार की आसक्ति का प्रकंपन नहीं होता।

अनमोल वचन

खणं जाणइ पंडिए - भ. महावीर

जो समय को जानता है, वही पंडित है।

Do with faith, if you lack faith do nothing

श्रद्धा से कर्म करो, श्रद्धा के अभाव में समस्त कर्म निष्फल है।

ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्ष: -तत्त्वार्थ सूत्र

ज्ञान और क्रिया से मोक्ष होता है।

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

प्राय: प्रतिदिन हुआ करती थी। रविवार के दिन तो पाण्डाल छोटा ही पडता था। प्रवचन भी उपाश्रय के हॉल से बाहर मंडप में ही हुआ करते थे।

ठाणा संघ में खरतरगच्छ की आम्नाय के परिवार अल्प थे। अधिकतर श्रावक तपागच्छ और आंचल गच्छ की मान्यता के थे। यह पूज्यश्री के समन्वयवादी दृष्टिकोण व आचरण का परिणाम था कि अन्य गच्छ वाले भी पूज्यश्री के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे। खरतरगच्छ व तपागच्छ वाले अपनी परम्परानुसार चतुर्थी को संवत्सरी करते थे जबकि आंचल गच्छ वालों की परम्परा पंचमी को संवत्सरी करने की थी।

चातुर्मास प्रवेश के साथ ही पूज्यश्री ने अपने मन में ठान लिया कि ठाणा संघ में एक आदर्श उदाहरण उपस्थित करना है। यहाँ एक ही संवत्सरी होनी चाहिये। सभी मिलकर करेंगे तो पूरे भारत में एक प्रेम व समन्वय भरा संदेश पहुँचेगा।

प्रवेश के साथ ही पूज्यश्री ने भगवती सूत्र के तात्विक व शास्त्रीय प्रवचनों के साथ साथ जैन एकता पर विशेष बल देना प्रारंभ किया। परिणाम यह हुआ कि तीनों ही समुदाय वालों ने... सकल श्री संघ ने मिलकर एक ही दिन संवत्सरी महापर्व की आराधना की। उस दिन का माहौल व वातावरण अपने आप में अत्यन्त अनूठा व अनुकरणीय था। ठाणा संघ में हुई संवत्सरी की एकता व आराधना का पूरा वर्णन भावनगर से प्रकाशित सुप्रसिद्ध जैन नामक गुजराती साप्ताहिक में विस्तार से प्रकाशित हुआ था।

पूज्य गुरुदेवश्री ने सन् 1950 वि.सं. 2007 का चातुर्मास ठाणा संघ की विनंती स्वीकार कर श्री मुनिसुव्रतस्वामी तीर्थ ठाणा में किया था। ठाणा संघ की यह विशेषता थी कि यहाँ के संघ में मारवाडी, गुजराती व कच्छी तीनों समाज सम्मिलित थे। पूज्य गुरुदेवश्री ने भगवती सूत्र पर अपने सार्वजनिक प्रवचन देने प्रारंभ किये थे।

पूज्यश्री के ओजस्वी व क्रान्तिकारी प्रवचनों को सुनने के लिये दो से तीन हजार लोगों की उपस्थिति

Diploma®
Metal Industries
For Better Cooking & Economy

Mfg. Of Stainless Steel Utensils

B-7, RAVI ESTATE, AMBIKA NAGAR, ODHAV
Ahmedabad-382415 (Gujarat)

B.L.Bothra 09426170801 Ramesh 09427031294
Jitesh 09427031295 Sunil 09429021264

15
श्रमण-चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

संसार की असारता... संयम की सरसता

संसार में सर्वाधिक सम्माननीय यदि कोई पदार्थ है तो उसका नाम है - रजोहरण! इस दिव्य पदार्थ को प्राप्त करके व्यक्ति चक्रवर्ती और देवेन्द्र से भी अधिक आदरणीय, पूजनीय और वंदनीय बन जाता है। यह सारा प्रभाव केवल और केवल संयम वेश का है। संसार का वेश उतरते ही सारा विश्व उसके चरणों में आलोटने लगता है। जय-जयकारों से आसमान को गूंजायमान कर देता है। गृहवास के इच्छुक साधु का मन गुरू महाराज अच्छी तरह जान रहे हैं। अरे मुनि! तूं यह कैसा अनर्थ करने जा रहा है? पूजित-वंदित इस वेश का परित्याग करके गृहस्थ बनना चाहता है।

देख! इस दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका के पांचवें सूत्र को **'ओमजण पुरक्कारे'**

तूं घर पर जायेगा, तो न घर का रहेगा, न घाट का। धोबी के कुत्ते जैसी तेरी बुरी हालत की कल्पना से मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं।

अरे! दीक्षा लेने की बात तो दूर, लम्बे वैराग्यकाल की जरूरत तो दूर, जैसे ही एक व्यक्ति के मन में दीक्षा की भावना स्फुरित होती है और लोगों को पता चलता है, वैसे ही उसका मान-सम्मान कितना बढ़ जाता है! विहार के दौरान सम्पूर्ण संघ जैसे उसकी सेवा में पलक पावड़े बिछा देता है।

ए मुनिवर! तूं जरा अपनी अतीत, वर्तमान और भविष्य की स्थिति के संदर्भ में विचार कर!

तेरी दीक्षा का मुहूर्त्त निकलते ही तेरा नाम जैसे हजारों-लाखों होठों पर छा गया था! हजारों आँखें तेरे दर्शन के लिए तरसने लगी थी।

समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में तेरा नाम, तेरी तस्वीर जैसे संयम का गुणगान गा रही थी। जो स्वजन-परिजन तुम्हें कभी बुलाते तक नहीं थे, वे ही तेरे आगे-पीछे दौड़ने लगे थे।

ऐसा क्या घटित हो गया कुछ घण्टों-दिनों-महिनों में, कि लोगों ने तुम्हें अपनी पलकों पर बिठा दिया। बंदोले के लिए चक्कर काटने लगे। शानदार वरघोड़ा... अभिनंदन समारोह! स्वजनों का ही नहीं, परिजनों का भी अपूर्व उल्लास। तुम्हारे गोत्र और गाँव के ही नहीं, सम्पूर्ण संघ के लोग तेरे दीक्षा समारोह में पहुँचे थे। अपने कंधों पर बिठाकर कितना नचाया था तुम्हें! कितने लाड-कोड किये थे! चांदी के बहुमान पत्र एवं सोने की चैन से तेरा अभिनंदन किया था।

दीक्षा समारोह से लगाकर आज तक कितने बड़े-बड़े सेठ, जमींदार, साहूकार, उद्योगपति, नेता, राजा-महाराजा, अफसर, प्रधानमंत्री से लगाकर विविध मंत्री तुम्हें प्रणाम करते हैं। तुम्हारे पास एक पैसा नहीं होने पर भी

करोड़पति-अरबपति-खरबपति तुम्हें भावपूर्ण वंदना करते हैं।

और ऐसा भी नहीं कि तूं पढ़-लिखकर बहुत होशियार बन गया है। अभी तो बहुत अल्प सीखा-जाना है। केवल प्रतिक्रमण, प्रकरण, भाष्य, कर्मग्रन्थ के ही मूल सूत्र कण्ठस्थ किए हैं।

न्याय, प्राकृत, संस्कृत, व्याकरण, छन्द, काव्य, दर्शन, इतिहास, ध्यान, तत्त्व का अध्ययन तो छोड़, तेरे पंच प्रतिक्रमण का भी अर्थ ठीक से नहीं हुआ है, तब भी तेरी पूजा-सेवा कितनी!

शाताकारी वसति। गोचरी में मधुर व्यंजन! प्रवेश समारोह में बैण्ड-बाजें। श्री संघ को तेरी कितनी चिन्ता कि पाँवों में एक कांटा चुभा नहीं कि संघ के आगेवान तेरी सेवा में प्रस्तुत हुए नहीं।

तुझे याद है न सम्प्रति सम्राट् का पूर्व भव?एक भिखारी। जैनी दीक्षा का कोई बोध नहीं। होता भी कैसे, वह कोई ज्ञानगर्भित वैरागी तो था नहीं। भूख, गरीबी, अनाथता के दु:खों से पीड़ित वह भिखारी साधु को देखकर दु:ख-गर्भित वैरागी बना।

ओह! यह बाबा भी तो मेरे जैसा ही है। इसके भी गन्दे, मैले-कुचेले वस्त्र! झोली में पात्र! बेतरतीब बढी हुई दाढी-मूंछ! शरीर पर चढा हुआ दो-दो इंच मैल!

पर लोग इसका सत्कार करते हैं और मेरा तिरस्कार! 'पधारो पधारो' कहकर इसका अभिवंदन करते हैं और मुझे दहलीज पर भी पाँव नहीं रखने देते। अरे! ये भिक्षु तो मैं भिखारी! मुझे कुछ भी खाने को नहीं देते जबकि इसे छप्पन पकवान प्रदान करते हैं।

क्यों न मैं भी साधु बन जाऊँ?

पहुँचा उस साधु के पीछे उपाश्रय में। पट्ट पर विराजमान आर्य सुहस्तिसूरि। पावन आभावलय! मुख पर तैरता मंद-मंद स्मित! आँखों में निर्मलता की गंगोत्री! उत्तम चारित्र पालक होने के साथ वे आगम-ज्ञान के अथाह कोष थे।

सम्मुख प्रस्तुत था भिखारी! करबद्ध निवेदन! गुरू महाराज बाह्य अवस्था को देखने के साथ साथ उसके पार जो अदृश्य था, उसे भी निहार रहे थे। वर्तमान की कटी-फटी हालत के पीछे छिपा उज्ज्वल भविष्य उनसे अनभिज्ञ नहीं था। दीक्षा दे दी! बाह्य वेश का परिवर्तन!

गोचरी में क्या क्या लाना है?

मिठाई भी, नमकीन भी! रोटी और सब्जी भी! दूध, दही, घी भी! जो मिले, वह सब ले आना। अब निर्बल शरीर! कमजोर पाचन तन्त्र! वह भला इन सबको कैसे स्वीकार कर पाता! शाम होते-होते उदर-शूल ने भयानक रूप धारण कर लिया। न उठा जाये, न बैठा जाये। सहना भी मुश्किल, कहना भी मुश्किल।

सारे साधु सेवा में उपस्थित। कोई पाँव दबा रहा, कोई दवा लगा रहा।

सारा संघ भी दौड़ा आया। वैद्यराज भी आये! मरहम लगायी पर कोई फर्क नहीं पड़ा। पीड़ा उत्तरोत्तर बढ रही थी पर वह पीड़ा शनैः शनैः समाधि और चिन्तन के द्वार खोल रही थी- अरे! मैंने आज दीक्षा ली और ये बड़े-बड़े साधु मेरी सेवा कर रहे। जिन लोगों से हजारों बार मैंने दुत्कार पायी है, वे ही लोग मेरे चरणों का स्पर्श और मेरी सेवा करके अपने आपको पुण्यशाली-गौरवशाली समझ रहे हैं।

परिवर्तन कहाँ आया?

मैं तो वो ही हूँ। न कुछ पढ़ा-लिखा, न कोई साधना की। केवल वस्त्र बदल जाने से कितना बड़ा अन्तर आ गया। ओह! यह सारा चमत्कार रजोहरण का, वेश परिवर्तन का है। वाह! यह वेश कितना पावन कि इसके सामने सेठ-साहूकार भी झुकते हैं। यह रजोहरण कितना उत्तम कि हाथ में आते ही एक भिखारी राजा से भी ज्यादा प्रिय और अभिनंदनीय बन जाता है। इधर वेदना बढती रही, उधर संयम की वंदना चढती रही। शुभ अध्यवसायों में रमण करता हुआ वह नूतन साधु स्वर्गवासी हो गया और सम्प्रति सम्राट् बना। देख! यह संयम का वेश मोक्ष होने तक सारी अनुकूलताएँ देता है, ऐसे

कल्पवृक्ष को छोड़कर तूं बबूल की छाया में जाने का दुस्साहस कर रहा है।

यदि तुझे साहस करना ही है तो जप-तप, ज्ञान-ध्यान की पराकाष्ठा तक पहुँचने का कर, जो तुझे शाश्वत समाधि देगा!

तेरा ऐसा दुस्साहस देखकर मेरी आत्मा कांप रही है, अरे! अरे! भोगों की मार कितनी खतरनाक जो त्याग के शिखर पर आरूढ साधु को तलहटी से भी नीचे उस गहरे गर्त में गिरा देती है, जहाँ से उबरने कोई मौका भवोभव हाथ नहीं लगता।

फिर तूं घर पर जा रहा है तो सोच ले कि संसार चलाना कोई सरल काम नहीं है। वहाँ पेट के खड्डे को भरने का इन्तजाम कैसे होगा?दिन-रात गधे की तरह मजदूरी करनी पड़ेगी। शादी भी झंझट का कार्य है। उसमें भी कलहकारी स्त्री मिल गयी तो तेरा जीवन साक्षात् नरक बन जायेगा। दुकान नहीं चलेगी तो संतान को क्या तो खिलायेगा, क्या तो पिलायेगा?उनकी शिक्षा का क्या होगा?तनाव, चिन्ता और परेशानी तेरे सारे चैन-सुकून को हर लेंगे।

आज यहाँ तो राजा का राजा, चक्रवर्ती का चक्रवर्ती बना हुआ सुख और शान्ति से जीवन चला रहा है, वहाँ तेरी हालत भिखारी से गयी गुजरी होगी। कोई भी तुझे पसन्द नहीं करेगा। तेरी कितनी अवमानना होगी। परिजन ही नहीं, स्वजन भी तेरे साथ रहना, उठना, बैठना स्वीकार नहीं करेंगे। लोगों का तुझ पर से भरोसा हट जायेगा- कोई भी घर में घुसने नहीं देगा। सडे कान वाली कुतिया की तरह तूं हर जगह से मार-पीट कर भगा दिया जायेगा।

खुले बाजार में तेरा घोर अपयश होगा। सारा संसार तुझ पर थूं...थूं... करेगा। तेरे माँ-बाप का ही नहीं, पूरे खानदान का नाम धूल में मिल जायेगा।

कदाच् पुण्ययोग से तूंने संसार की सारी सुविधाएँ प्राप्त कर ली, मेहनत से करोड़पति-अरबपति बन गया, तब दुनिया तेरे सामने तेरी निंदा भले ही न करें, पीठ के पीछे हजार बातें करेंगे। वत्स! थोड़ा चिन्तन कर! संसार की मूर्च्छा से बाहर आ।

इस असार संसार से सुख पाने के प्रयत्न का अर्थ है- रेत को पीलकर तेल पाने का मूर्खता भरा कार्य करना! तेरे लिए तेरा अकार्य शोभास्पद नहीं है। जरा अपनी गरिमा और महिमा का चिन्तन करके चंचल मन-अश्व की लगाम खींच, इसी में तेरे इहलोक-परलोक का सुख है।

जैन तीर्थ दर्शन

(राजस्थान एवं गुजरात)

फोर सीजन्स इण्डिया टूर्स

लार्ज कोच, मिनी कोच, टेम्पो ट्रेवल्स, इनोवा एवं स्विफ्ट डिजायर

☞ आरामदायी व सुविधाजनक ए.सी.बसें (18/35 सीट)। ☞ राजस्थान का पहला जैन दर्शन हेतु विशाल टूर नेटवर्क।

☞ बेहतर सेवायें देने हेतु अनुभवी चालक/परिचालक द्वारा राजस्थान/गुजरात जैन स्थल भ्रमण।

☞ आरामदायक सफर के साथ तीर्थ स्थानों के बारे में विस्तृत जानकारी।

406, वी-जय सिटी पोईन्ट, अहिंसा सर्किल, सुभाष मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-1 (राज.) इण्डिया

ब्रांच : उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर।

फोन : +91 141-5112605/06/07, फैक्स :+ 91 141-5112608, मो. 98289 14111

E-mail: info@fsit.in, accounts@fsit.in Web: www.fsit.in

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

मधुर संस्मरण

मेरे बारे में मेरी अनुभूति

पूर्व जन्म के पुण्योदय से मुझे प्रभु महावीर का शासन प्राप्त हुआ है। बिना विशेष परिश्रम के अणगार का जीवन प्राप्त हुआ है। बचपन में प्राप्त किए संयमी जीवन का पचास वर्ष की उम्र में विश्लेषण करने जा रही हूँ, तब सर्वप्रथम स्वयं से जिज्ञासा करने का मन होता है कि मैंने क्या छोड़ा और क्यों छोड़ा?

एक आत्मा जब संयम की राह पर आगे बढ़ती है तो वह बहुत कुछ त्याग करती है। वर्तमान के साधन-प्रधान युग में निर्दोष संयम की आराधना अचरज को जन्म देती है। इन्द्रियों का आकर्षण, स्वजनों का अपनत्व और भौतिक साधनों के उपयोग की छूट इन तीन शब्दों में त्याग की परिभाषा समाविष्ट हो जाती है। पर इनके त्याग की गहराई में जब हम जाते है तो पता चलता है कि प्राप्ति के बाद इनका त्याग कितना कठिन होता है।

यद्यपि जब चेतना में वैराग्य की लौ प्रज्ज्वलित होती है, तब उसे सारा संसार निरर्थक एवं व्यर्थ प्रतीत होता है पर इन विरक्त विचारों को स्थिरता देना भी भीषण पुरूषार्थ है।

मैंने सपरिवार जब संयम स्वीकार किया था, वह युग एवं उस समय का वातावरण आज के वातावरण से बिल्कुल भिन्न था। उस समय जब आमघरों में विद्युत व्यवस्था भी नहीं पहुंची थी तो विद्युत चलित अन्य व्यवस्थाओं की कल्पना भी कहाँ हो सकती है?और यही कारण है कि मुझे कभी यह अहसास नहीं हुआ कि संयम कठिन है फिर भी आंतरिक वृत्तियों में परिवर्तन तो कठिनाई का अहसास देता ही है।

प्रारंभ से ही मैं बिन तराशा पत्थर थी। शैशव में तो माँ के अनुशासन तले कुछ चिंतन का अवकाश था ही नहीं। उस समय मैं इतनी दब्बु स्वभाव की थी कि मेरी स्मृति में ऐसी एक भी घटना नहीं है जहाँ मेरी हल्की सी जिद भी प्रकट हुई हो। न मेरी कोई मांग थी न आकांक्षा। आज भी मुझे मेरा बचपन बहुत अच्छी तरह याद है। मैं अत्यंत आज्ञाकारी, अत्यन्त नादान और अत्यंत भावुक थी। जरा-जरा सी बात पर मेरी आँखों से सावन-भादवा बरसना आम बात थी।

हाँ?बचपन में भी मैं कल्पना प्रधान अवश्य थी। जितनी मेरी उम्र थी, उसके अनुसार विचारधारा उस समय भी अवश्य थी। आज भी मुझे याद है- उस समय भी मुझे अपने पिता की कमी... उनका अभाव प्रतिपल अखरता था। पिता-पुत्री का संबंध... उसकी ऊष्मा... उसका मूल्य... उस समय भी मेरे रोम-रोम में दंख मारता था। मैं अपने बचपन की इस संबंध में छोटी सी घटना का उल्लेख कर रही हूँ। मैं चौथी या पांचवीं कक्षा में पढ रही थी। एक दिन किसी कार्यवश मेरी सहपाठी को बुलाने के लिए उसके पिताजी आये और छुट्टी दिलाकर अपने साथ ले गए।

दिखने में यह घटना छोटी सी थी। एक पिता का अपनी पुत्री को कार्यवश छुट्टी दिलाना और साथ ले जाना सामान्य थी, पर इस छोटी सी घटना ने उस समय मेरी आँखों में आँसू ला दिए थे। एकदम निरीह लगभग 9 या 10 साल की, मैंने उस समय इतना जरूर सोचा... अगर मेरे पिताजी होते तो मुझे भी लेने आते।

मेरा अबोध बालमन पिताजी के अस्तित्व को लेकर अनेक प्रकार की कल्पनाएँ करता था। शाम के समय हम गणित पढने छगनजी मास्टर के पास महाजनी स्कूल जाते थे। वहाँ छुट्टी के वक्त खुल्ले आकाश के नीचे घड़िये बोलते थे। जब भी आकाश में बिखरते जुड़ते बादलों को देखती, मैं अवश्य सोचती- यहाँ से मेरे पिताजी जरूर मुझे देख रहे होंगे।

ऐसी ही एक घटना दीक्षा के कुछ वर्ष बाद की है। एक दीक्षार्थी लड़की के पिताजी उससे मिलने आये। लड़की ने अत्यंत विनय एवं श्रद्धा से भरकर पिता के चरण स्पर्श किए। पिताजी ने अपनी बेटी के सिर पर वात्सल्य से भरकर हाथ फेरा... लाड़ किया। मेरी आँखों ने वह दृश्य देखा। मुझे पता ही नहीं चला कि कब मेरी आँखों के कोर भीग गये।

नि:संदेह भावात्मक रूप से मेरे अनदेखे पिताजी मेरे जेहन में सदा-सदा उपस्थित रहे। इसी संवेदना ने मुझे वात्सल्यचेता श्री हरखचंदजी नाहटा द्वारा बेटी का संबोधन देते ही उनसे हृदय की असीम गहराई के साथ जोड़ा था। यह मेरा सौभाग्य था कि वे मेरी कल्पनाओं से भी कहीं अधिक व जन्मदाता पिता से भी ज्यादा संवेदनशील रहे। सबसे अच्छी बात तो यह थी कि मेरी व्यावहारिक व्यवस्थाओं के प्रति जितने सजग रहे, उससे भी कहीं अधिक वे मेरी आत्मा की ऊँचाई के प्रति सावधान रहे। मेरे संग्रह में उनके बहुत सारे पत्र मौजूद हैं। उन्हें पढ़कर अनायास ही उनका भाव प्रवण कोमल पर अनुशासक व्यक्तित्व साकार हो जाता है। पत्र की प्रत्येक पंक्ति में जहाँ एक सवत्सलपिता नजर आता है, वहीं मेरे भाव जगत का प्रेरक रूप भी उभरे बिना नहीं रहता।

निसंदेह उनको पाने के बाद मेरा ही नहीं पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री भाई म.सा. के मन का भी एक सूनापन समाप्त हुआ था। उनका वात्सल्य अल्प अवधि तक ही प्राप्त हुआ। लगभग 5 वर्ष की अवधि तक ही उनका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ पर वे पाँच वर्ष भी आज तक को तृप्ति देने के लिए पर्याप्त है। आज उनकी विदायी को डेढ दशक बीतने जा रहा है फिर भी प्रतिपल ऐसा लगता है जैसे वे मेरे भीतर जीवित हैं। उनके वात्सल्य ने मेरी त्रुटियों के परिष्कार में बहुत बड़ी भूमिका निभायी थी और आज भी निभा रहा है।

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने पालीताना नवाणुं यात्रा के आयोजन माला विधान के पश्चात् ता. 30 दिसम्बर को शुभ मुहर्त्त में विहार किया है। वे धंधुका होते हुए ता. 6 जनवरी 2014 तक अहमदाबाद पधारेंगे। ता. 7 को विहार कर ता. 16 जनवरी तक हाडेचा पधार कर ता. 17 जनवरी को चितलवाना में नगर प्रवेश करेंगे।

शा. दलीचंदजी मिश्रीमलजी मावाजी मरडिया परिवार द्वारा ता. 18 से 20 जनवरी तक छह 'री' पालक संघ यात्रा के निमित्त त्रिदिवसीय महोत्सव के पश्चात् 21 जनवरी 2014 को श्री शंखेश्वर महातीर्थ के लिये छहरी पालित संघ का प्रस्थान होगा। ता. 4 फरवरी को शंखेश्वर तीर्थ में प्रवेश कर ता. 5 फरवरी को संघपति माला का आयोजन होगा।

ता. 5 को ही दोपहर में विहार कर पूज्यश्री ता. 13 फरवरी तक मांडवला जहाज मंदिर पधारेंगे। वहाँ 5-7 दिनों की स्थिरता के पश्चात् बाडमेर की ओर विहार करेंगे। बाडमेर में श्री कल्याणपुरा पार्श्वनाथ मंदिर का 5 मार्च 2014 को अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न होगा। इस मंदिर का आमूलचूल जीर्णोद्धार संपन्न करवाया गया है।

संपर्क सूत्र- पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.
श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक, **जहाज मंदिर,**
पो. मांडवला- 343042 जिला-जालोर (राज.) फोन- 96496 40451 (मुकेश- 9784326130)

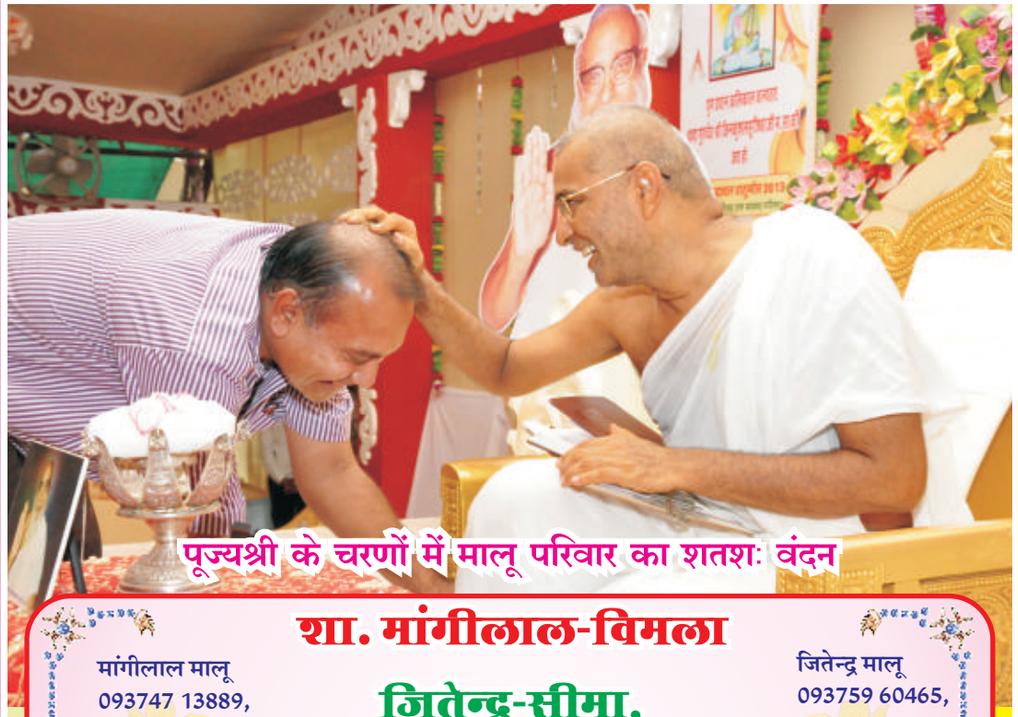

6 तत्त्वावबोध

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

चतुर्भंगी का चमत्कार

गतांक से...

३५. भाग्य-पुरूषार्थ

1. भाग्य प्रतिकूल पर पुरूषार्थ कर अनुकूल बनाया – मुनि हरिकेशबल
2. भाग्य अनुकूल पर प्रमाद से प्रतिकूल बनाया – मंगू आचार्य
3. भाग्य अनुकूल और पुरूषार्थ भी अनुकूल – भरत चक्रवर्ती
4. भाग्य प्रतिकूल और पुरूषार्थ भी प्रतिकूल – कालसौकरिक कसाई

३६. आराधना-आशातना

1. संयम की निरतिचार आराधना की – धन्ना, शालिभद्र आदि
2. संयम साधना की पर अतिचार लगाये – नंदीषेण, अरणिक आदि
3. संयम की आराधना नहीं की पर अतिचार लगाये – गोशालक
4. संयम की न आशातना की, न आराधना की – वासुदेव श्री कृष्ण

३७. द्रव्य-भाव-श्रद्धा

1. द्रव्य से श्रद्धा, भाव से अश्रद्धा– श्री कृष्ण के साथ अठारह हजार साधुओं को वंदन करने वाला – वीरक शालवी
2. द्रव्य से श्रद्धा, भाव से श्रद्धा – सुलसा श्राविका, पेथड शाह, कुमारपाल सम्राट्
3. द्रव्य से अश्रद्धा, भाव से श्रद्धा – अम्बड संन्यासी
4. द्रव्य से अश्रद्धा भाव से अश्रद्धा – कमठ तापस

३८. सबल-निर्बल

1. द्रव्य से सबल, भाव से निर्बल – सुभूम चक्री
2. द्रव्य से सबल, भाव से सबल – सनत्कुमार चक्री
3. द्रव्य से निर्बल, भाव से सबल – कुरगडु मुनि
4. द्रव्य से निर्बल, भाव से निर्बल – एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय

३९. समता-क्रोध

1. गुरू व शिष्य, दोनों ने क्रोध किया– चण्डकौशिक ने पूर्व भवों में शिष्य के साथ, कुलवालुक मुनि व उसके गुरू
2. गुरू द्वारा क्रोध, शिष्य द्वारा समता – चण्डरूद्राचार्य एवं उनका शिष्य
3. गुरू द्वारा समता, शिष्य द्वारा क्रोध – परमात्मा महावीर और जमाली
4. गुरू और शिष्य, दोनों में समता – ऋषभदेव और पुण्डरिक स्वामी

४०. गाय-बछड़ा

1. गाय को बछड़ा है और दूध भी देती है – साधारण गाय
2. गाय को बछड़ा नहीं है पर दूध देती है – कामधेनु गाय
3. गाय को बछड़ा है पर दूध नहीं देती – वृद्ध, निर्बल, रोगी गाय
4. गाय को बछड़ा नहीं और दूध भी नहीं देती – वन्ध्या गाय

४१. दर्शन-चारित्र

1. दर्शन शुद्ध, चारित्र भी शुद्ध – तीर्थंकर, गणधर
2. दर्शन शुद्ध, चारित्र अशुद्ध – मरिची, नंदीषेण मुनि
3. दर्शन अशुद्ध, चारित्र शुद्ध – अंगारमर्दकाचार्य, जमाली
4. दर्शन अशुद्ध, चारित्र अशुद्ध – गोशालक

४२. ज्ञान-चारित्र

1. ज्ञान शुद्ध, चारित्र अशुद्ध – मरीचि
2. ज्ञान अशुद्ध, चारित्र अशुद्ध – कपिला दासी, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती
3. ज्ञान शुद्ध, चारित्र शुद्ध– तीर्थंकर, केवलज्ञानी, गणधर आदि
4. ज्ञान अशुद्ध, चारित्र शुद्ध – जमाली, रोहगुप्त

With best compliments from ASHOK M. BHANSALI

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

जिज्ञासा

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

– मेवे (dry fruits) के बारे में बताईये कि धर्म शास्त्र परम्परानुसार उसका उपयोग-निषेध कब-कब है?

– सूखे मेवे में अंजीर का तो सर्वथा त्याग होता है। क्योंकि वह बहुबीज वाला होता है। उसका उपयोग नहीं हो सकता। अन्य काजू, बादाम, पिस्ता, किशमिश आदि समस्त प्रकार का मेवा कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा से फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी तक भक्ष्य है, उपयोग किया जा सकता है। श्रावक श्राविका स्वयं भी काम ले सकते हैं तथा साधु साध्वियों को भी कल्पनीय होता है।

फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा से आषाढ शुक्ल चतुर्दशी तक बादाम व सूखा नारियल उपयोग में आ सकता है। इसके सिवाय तमाम प्रकार का सूखा मेवा अभक्ष्य है अर्थात् उपयोग में नहीं आ सकता।

आषाढ शुक्ल पूर्णिमा से कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी तक समस्त प्रकार का सूखा मेवा अभक्ष्य होता है। सूखा नारियल और बादाम उसी दिन की फोडी हुई काम आ सकती है। दूसरे दिन वह भी अभक्ष्य होती है।

फाल्गुन सुदि 14 से पहले काजु आदि से कतली या चक्की बनाई हो अथवा घी में तले हो तो कडाई विगई के काल के हिसाब से 20 दिन तक उसका उपयोग किया जा सकता है।

– टमाटर उपयोग में लिया जा सकता है या नहीं! कईयों का कहना है कि लाल रंग का होने से उपयोग नहीं होना चाहिये। कईयों का कहना है कि बहुबीज होने के कारण वे अभक्ष्य है। कई समुदायों में टमाटर का निषेध देखने को मिलता है।

– टमाटर को कहीं पर भी अभक्ष्य नहीं माना है। त्याग करना अलग बात है, उसे अभक्ष्य कहना अलग बात है। लाल रंग का होने से निषेध करना, उचित नहीं होता। क्योंकि लाल तो मतीरा भी होता है और मिर्ची भी लाल होती है।

टमाटर को बहुबीज भी नहीं कह सकते हैं। क्योंकि टमाटर की बनावट अलग प्रकार की है। बीजों पर झिल्ली होने से उसे बहुबीज नहीं कहा जा सकता। इसलिये टमाटर अभक्ष्य नहीं है।

रतन बागवान फूल डेकोरेशन
व गार्डन (बगीचा) कॉन्ट्रेक्टर
शादी, पार्टी, प्रतिष्ठा में भव्य फूलों की सजावट की जाती है व पेड पौधो के होलसेल विक्रेता
दिपक रंगोली, नेट, कपड़ा चट्टाई बास, चैनल बुका, आर्टीफिसियल सजावट की जाती है
तलबी तालाब के पास, कृषि मण्डी रोड़, भीनमाल-343029 (राज.)
मो. 94143 73350, 9660532272, फोन 7568305484 (घर)

पूजनीया खान्देश शिरोमणि गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा.

के 72वें जन्मदिन एवं 62वें संयम दिवस पर

संयम अभिनंदन गीतिका

तर्ज- होठों से

संयम अभिनंदन की, यह वेला आई है।
जन्म दिन अभिनंदन की, यह वेला आई है।।टेर।।

षष्टि वर्षों से जो संयम पालन करते।
सम विषम स्थितियों में समता दिल में धरते।
पुण्योदय से ऐसी, गुरुवर्या पाई है, संयम.।।1।।

इक सप्तति पूरण हो द्विसप्तति वर्ष लगा।
शुभ बधाई देने का मन हर्षोल्लास जगा।
शत वर्ष जीयो गुरुवर अरदास सुनाई है।।2।।

सुख शांतिमय तेरे जीवन का हर पल हो।
यश चारों दिशि छाये तन मन अतिनिर्मल हो।
विश्वज्योति के नयनों में तेरी मूरत समाई है।।3।।

स्वरोदय विज्ञान का आधार : सूर्य, चंद्र और सुषुम्ना स्वर

स्वर चिकित्सा का इतिहास पुराना है। स्वर को जानने का तरीका भी बेहद सरल है। सर्वप्रथम हाथों द्वारा नाक के छिद्रों से बाहर निकलती हुई श्वास को महसूस करने का प्रयत्न कीजिए। देखिए कि कौन से छिद्र से श्वास बाहर निकल रही है। स्वरोदय विज्ञान के अनुसार अगर श्वास दाहिने छिद्र से बाहर निकल रही है तो यह सूर्य स्वर होगा।

इसके विपरीत यदि श्वास बाएँ छिद्र से निकल रही है तो यह चंद्र स्वर होगा एवं यदि जब दोनों छिद्रों से नि:श्वास निकलता महसूस करें तो यह सुषुम्ना स्वर कहलाएगा। श्वास के बाहर निकलने की उपरोक्त तीनों क्रियाएँ ही स्वरोदय विज्ञान का आधाार हैं।

सूर्य स्वर पुरुष प्रधान है। इसका रंग काला है। इसके विपरीत चंद्र स्वर स्त्री प्रधान है एवं इसका रंग गोरा है। इडा नाडी शरीर के बाईं तरफ स्थित है तथा पिंगला नाडी दाहिनी तरफ अर्थात् इडा नाडी में चंद्र स्वर स्थित रहता है और पिंगला नाडी में सूर्य स्वर। सुषुम्ना मध्य में स्थित है, अत: दोनों ओर से श्वास निकले वह सुषम्ना स्वर कहलाएगा।

स्वर को पहचानने की सरल विधियाँ

- शांत भाव से मन एकाग्र करके बैठ जाएँ। अपने दाएँ हाथ को नाक छिद्रों के पास ले जाएँ। तर्जनी अँगुली छिद्रों के नीचे रखकर श्वास बाहर फेंकिए। ऐसा करने पर आपको किसी एक छिद्र से श्वास का अधिक स्पर्श होगा। जिस तरफ के छिद्र से श्वास निकले, बस वही स्वर चल रहा है।
- एक छिद्र से अधिक एवं दूसरे छिद्र से कम वेग का श्वास निकलता प्रतीत हो तो यह सुषुम्ना के साथ मुख्य स्वर कहलाएगा।
- एक अन्य विधि के अनुसार आईने को नासाछिद्रों के नीचे रखें। जिस तरफ के छिद्र के नीचे काँच पर वाष्प के कण दिखाई दें, वही स्वर चालू समझें।

श्री जहाज मंदिर
मांडवला

प्रतिष्ठा की 15वीं वर्षगांठ निमित्ते

भव्य मेले का आयोजन

निश्रा
पूज्य गुरूदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

शुभ दिन
माघ सुदि 14
ता. 13 फरवरी 2014
को प्रात: 9 बजे

सकल श्री संघ से पधारने की हार्दिक विनंती है।

निवेदक
श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मंदिर
मांडवला- 343042 जिला- जालोर राज.
फोन - (02973) 256107, 256192, 96496 40451

जहाज मंदिर वार्षिक सामूहिक स्वामिवात्सल्य में लाभ लीजिये

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक जहाज मंदिर की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. की पावन निश्रा में ता. 30 जनवरी 1999 को अत्यन्त आनन्द व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई थी।

वर्षगांठ पर मेले का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। सभी को लाभ प्राप्त हो सके, इस हेतु ट्रस्ट मंडल ने सामूहिक योजना बनाई है। 21 हजार रूपये की राशि (सिर्फ एक बार) अर्पण करने वाले का नाम प्रतिवर्ष छपने वाली आमंत्रण पत्रिका में उनके नाम प्रकाशित किये जायेंगे। तथा सैंकडों वर्षों तक उन्हें मेले व स्वामिवात्सल्य पूजा आदि का सामूहिक लाभ प्राप्त होगा। सकल श्री संघ से निवेदन है कि इस योजना में अधिक से अधिक नाम लिखावें।

अभी तक जिन्होंने लाभ प्राप्त किया है, उनके नाम इस प्रकार है-

जहाज मंदिर में मेले के कायमी लाभार्थी

श्री कांतिलालजी समरथमलजी रांका उम्मेदाबाद

श्री भागचंदजी समरथमलजी रांका उम्मेदाबाद

श्री उत्तमचंदजी समरथमलजी रांका उम्मेदाबाद

संघवी चम्पालालजी रघुनाथमलजी मुथा मांडवला

श्री द्वारकादासजी भगवानदासजी डोसी बाड़मेर-चौहटन

श्री कांतीलालजी पारसमलजी कागरेचा ओटवाला

सेठ श्री मांगीलालजी सुमेरमलजी लुंकड, उम्मेदाबाद

सेठ रिखबचंदजी मुन्नीलालजी चेरीटेबल ट्रस्ट

श्री सुरेशकुमारजी पीरचंदजी बाफना, उम्मेदाबाद

श्री रमेशकुमारजी समरथमलजी सिंघवी, आलासन

श्री मांगीलालजी लखमाजी लुंकड, पोसाना

श्री चम्पालालजी प्रेमचंदजी रांका, उम्मेदाबाद

श्री भंवरलालजी घेवरचंदजी विसाणी भंसाली, उम्मेदाबाद

श्री गजेन्द्रकुमारजी रीखबदासजी संकलेचा, बाड़मेर

श्रीमती धाईदेवी धर्मपत्नि स्व. श्री शंकरलालजी सेठीया, बाड़मेर

श्री मांगीलालजी चिंतामणदासजी संखलेचा, बाड़मेर

श्री कल्याणमलजी भीकमचंदजी छाजेड़, हरसाणी

श्री रामरतनजी नारायणमलजी छाजेड़, केशवणा

संघवी श्री दीपचंदजी रुगनाथमलजी मुथा, मांडवला

मै. फतेह ग्रेनाईट, जालोर

श्री रिखबचंदजी धर्माजी मंडोवरा, सिणधरी

श्री दीपचंदजी मदनलालजी कोठारी, ब्यावर

श्री पारसमलजी ताराचंदजी बरडीया, मांडवला-बाड़मेर

श्री भंवरलालजी विरदीचंदजी छाजेड़, बाडमेर

श्री रतनलालजी केशरीमलजी संकलेचा, बाड़मेर

संघवी तेजराजजी पुखराजजी गुलेच्छा, मोकलसर

श्री सुरेन्द्रकुमारजी धर्मेन्द्रकुमारजी पटवा, जालोर

श्री नेमीचंदजी हीरालालजी भंसाली, रामजी का गोल

श्री बाबुलालजी गुमानमलजी गुलेच्छा, सिवाणा

संघवी श्री अशोकजी मानमलजी भंसाली, सिवाणा

श्री अशोकजी मोहनलालजी गुलेच्छा, जसोल

श्री भंवरलालजी रीखबचंदजी गुलेच्छा, मोकलसर

श्री नवरतनजी मेघराजजी ललवानी, अक्कलकुआं

संघवी वंसराजजी रीखबचंदजी भंसाली, सिवाणा

श्री विमलकुमारजी गणेशमलजी सिंघवी, मांडवला

श्री सुरजमलजी विकासजी देवड़ा धोका, खाण्डप-हैद्राबाद

श्री विनोदकुमारजी चम्पालालजी बागरेचा, गढ सिवाना

श्रीमती खम्मादेवी वनेचंदजी मंडोवरा, सिणधरी

श्रीमती गवरीदेवी उदयराजजी मंडोवरा, सिणधरी

श्री वंसराजजी भंवरलालजी जवेरीलालजी देसाई, सिणधरी

श्रीमती रेशमीदेवी भूरचंदजी मंडोवरा, सिणधारी

श्री लालचंदजी केवलचंदजी मंडोवरा, सिणधरी

श्री भीखचंदजी धनराजजी देसाई, सिणधरी

श्रीमती सुआदेवी धींगडमलजी लूणिया, शेरगढ़

श्री आसुलालजी हमीरमलजी मालू, बाड़मेर

श्रीमती हउआदेवी सगतमलजी मालू, बाड़मेर

श्री मोहनलालजी आसुलालजी बोथरा, बाड़मेर

श्री दादा गुरुदेव भक्त, जोधपुर-हैदराबाद

श्रीमती सुखीदेवी रायचंदजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद

श्री बाबुलाल पारसमल बोहरा, सांचौर

स्व.श्री पुखराजजी गेमाजी कागरेचा, ओटवाला

शा. बाबुलालजी भूरचंदजी लुणिया, धोरिमन्ना

शा. बाबुलालजी राणामलजी लालण, मांगता-सिद्धपुर

डॉ. यु. सी. जैन, उदयपुर

संघवी शा. जीतमलजी कुन्दनमलजी दांतेवाडिया, मांडवला

संघवी शा. हंसराजजी मोहनलालजी मुथा, मांडवला

शा. पारसमलजी भानमलजी छाजेड, मांडवला

शा. भंवरलालजी धर्मचंदजी संकलेचा, पादरु

शा. भूरमलजी माणकमलजी बोथरा, बाडमेर

शा. मांगीलालजी पूनमचंदजी भंडारी, मांडवला

शा. मीठालालजी अरविंदकुमारजी विनायकिया, खंडप

शा. तेजराजजी धूड़चंदजी कांकरिया, सिवाना-हुबली

शा. केसरीमलजी संजयकुमारजी सेठिया, धोरिमन्ना

शा. प्रकाशमलजी छगनलालजी बोथरा, सांचोर

संघवी शा. लाधमलजी मावाजी मरडिया, चितलवाना

शा. गणपतराजजी राजमलजी बोथरा, सांचोर

श्रीमती मुंगीदेवी चुन्नीलालजी गांधी, चितलवाना

श्रीमती जमनादेवी जेठमलजी गांधी, चितलवाना

शा. दलीचंदजी मिश्रीमलजी मरडिया, चितलवाना

श्रीमती बदामीदेवी शंकरलालजी घीया, बोरीवली

शा. गोतमचंदजी अशोकचंदजी बालड, सिवाना-बल्लारी

शा. भवंरलालजी सोहनलालजी बोकडिया, जसोल

शा. जगदीशजी भंसाली, पाली

शा. शांतिलालजी डामरचंदजी छाजेड, मालेगांव

श्रीमती कंचनबेन सुमतलालजी शाह, चोटिला-कानपुर

संघवी शा. पूनमचंदजी पुखराजजी छाजेड, पादरू

शा. गोरधनमलजी प्रतापमलजी सेठिया, धोरीमन्ना

शा. मिश्रीमलजी वीराजी लूणिया, धोरीमन्ना

शा. मेवारामजी मूलचंदजी बोथरा, धोरीमन्ना

शा. पारसमलजी ताराचंदजी मालू, धोरीमन्ना

शा. बाबूलालजी जगदीशजी छाजेड, धोरीमन्ना

शा. जीवराजजी ऊकचंदजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर

शा. नेमीचंदजी गंगारामजी मालू, बाडमेर

स्व. श्रीमती मोहनीदेवी राणामलजी बाडमेर

स्व. श्रीमती टीपूदेवी भूरमलजी बोथरा, बाड़मेर

स्व.पारूदेवी रायचंदजी सेठिया, धोरीमन्ना

श्रीमती ढेलीदेवी हस्तीमलजी मालू, छीतर

स्व. भवंरीदेवी नेमीचंदजी बोथरा, बाडमेर

श्रीमती ढेलीदेवी आसूलालजी छाजेड, जसाई

शा. रिखबचंदजी हेमराजजी धारीवाल, चौहटन

श्रीमती मटूदेवी अमोलकजी मालू, झाख

शा. सम्पतराजजी ताराचंदजी बोथरा, बाडमेर

शा. बाबूलालजी माणकमलजी धारीवाल, चौहटन

शा. पारसमलजी रिखबदासजी धारीवाल, चौहटन

स्व.श्री जेकचंदजी भंवरलालजी धारीवाल, चौहटन

श्रीमती इचरजदेवी प्रभुलालजी छाजेड, सियाणी

श्रीमती सुआदेवी रिखबदासजी वीरपाडिया, जसाई

श्रीमती मेवीदेवी भवंरलालजी बोथरा, बाडमेर

शा. बाबूलालजी भगवानदासजी बोथरा, बाडमेर

शा. बाबूलालजी राणामलजी धारीवाल, बाडमेर

शा. पारसमलजी सुरतानमलजी भंसाली, बाडमेर

श्रीमती मथरीदेवी केसरीमलजी भंसाली, डोंगरी

श्रीमती निर्मलादेवी नितिनजी मेहता, जालोर-सूरत

शा. इन्द्रचंदजी प्रकाशचंदजी चौपडा, हैदराबाद

शा. नीरजजी मदनलालजी ओसवाल, दिल्ली

श्रीमती जडावदेवी कपूरचंदजी पालरेचा, मोकलसर

संघवी श्री ललितकुमारजी पुखराजजी माण्डवला

श्रीमती भीखीदेवी केशरीमलजी संकलेचा, गढसिवाना-हैद्राबाद

श्रीमती जम्मुदेवी मिश्रीमलजी छाजेड, गढसिवाना

शा. मोहनलालजी बस्तीमलजी दांतेवाडिया, माण्डवला

शा. दीपचंदजी जीतेन्द्रकुमारजी सांखला, समदडी

श्रीमती सुखीदेवी केवलचंदजी संकलेचा, रामा

श्रीमती कचंनदेवी रायचंदजी संकलेचा, रामा

शा. ललितकुमारजी पुखराजजी छाजेड, माण्डवला

शा. जीतमलजी देवीचंदजी पालगोता चौहान, ऐलाना-बैंगलोर

पुत्र हर्ष की स्मृति में अशोककुमार कपिल मेडतवाल, भीलवाडा

शा. मांगीलालजी शम्भुजी छाजेड, सिवाना-हैदराबाद

शा. माणकचंदजी गौतमकुमारजी चौपडा, ब्यावर

श्रीमती पुष्पादेवी सूरजमलजी संकलेचा, रामा-कल्याण

श्रीमती बदामीदेवी धींगडमलजी टीमरेचा, गढ सिवाना - भिवण्डी

श्रीमती शांतिदेवी वंसराजजी पालरेचा, मोकलसर

श्री हीरालालजी जीतेन्द्रकुमारजी कंकु चौपडा, बालोतरा

श्रीमती जडावदेवी चम्पालालजी विनायकिया, खण्डप

श्री हीरालालजी छगनलालजी शाह, मुंबई

श्री मीठालालजी गुणेशमलजी भंसाली, उम्मेदाबाद-बैंगलोर

श्रीमती अमीयादेवी दीपचंदजी पालगोता चौहान, उम्मेदाबाद

श्रीमती राधादेवी प्रेमचंदजी बरमेचा, हैदराबाद

श्रीमती सारीदेवी बोहरीदासजी बोथरा, बाडमेर

श्रीमती पुष्पादेवी बाबूलालजी संकलेचा, पादरू-हैदराबाद

श्रीमती मोहनीदेवी मूलचंदजी बाफना हिराणी परिवार, पादरू-हैदराबाद

श्री पुखराजजी बाबूलालजी छाजेड, निम्बलाना- हैदराबाद

शा. बाबूलालजी हीराचंदजी लूंकड, सिवाना-बेल्लारी

श्री टी. सोभागमलजी बिदामीबाई कोटेचा तिरची-लोहावट

श्रीमती कमलादेवी धर्मपत्नि श्री अशोककुमारजी सोनीमिण्डे, जोधपुर पवई मुंबई

शा. अमितकुमारजी समितकुमारजी सोनीमिण्डे पवई मुंबई

श्रीमती जयकुवरं बाईजी धर्मपत्नि श्री धनराजजी सोनीमिण्डे, सोनाणा चेम्बुर

श्रीमती किरणदेवी धर्मपत्नि सतीशकुमारजी जीरावला, सिवाना बैंगलोर

श्रीमती पूनादेवी धर्मपत्नि घेवरचंदजी संकलेचा, पादरू हैदराबाद

श्रीमती बक्सुदेवी नैनमलजी बाफना हीराणी परिवार, पादरू-हैदराबाद

श्रीमती सुखीदेवी शंकरलालजी विनायकिया, खंडप-हैदराबाद

श्रीमती कमलादेवी श्री चंपालालजी पारख, मोकलसर- हैदराबाद

शा. बाबुलालजी शिवलालजी तलेसरा सोलंकी, भलरों का वाडा - बैंगलोर

स्व. श्री सोभागमलजी बिदामीबाई कोटडिया, लोहावट- त्रिची

श्रीमती शांतादेवी पारसमलजी छाजेड, सिवाना-हैदराबाद

श्रीमती अनपूर्णादेवी माधमलजी गुलेच्छा, पादरु-हद्राबाद

श्रीमती शांतादेवी मदरुपचन्दजी बागरेचा, खाण्डप-हैद्राबाद

श्रीमती दुर्गावतीदेवी बाबुलालजी गुलेच्छा, पादरु-हैद्राबाद

श्रीमती विमलादेवी सोहनलालजी कंकुचोपडा, बालोतरा

संघवी पुखराजजी हस्तिमलजी पालरेचा, मोकलसर

श्री बाबुलालजी गिरधारीलालजी पालरेचा, मोकलसर

शत्रुंजय तीर्थाधिपति श्री आदिनाथाय नमः दादा श्री जिनकुशलसूरि गुरुभ्यो नमः

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा व

पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. की प्रेरणा से

छाजेड परिवार आयोजित श्री सिद्धाचल तीर्थ की नवाणु यात्रा के आराधक

सुश्री सोनल लालचंदजी कांकरिया, सुरत

सुश्री सुषमा रतनचंदजी कवाड, तिरुपात्तुर

सुश्री पायल रतनचंदजी कवाड, तिरुपात्तुर

सुश्री धर्मिष्ठा सुरेन्द्रजी गुलेच्छा, तिरुपात्तुर

की नवाणु यात्रा की पूर्णाहूति पर उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनायें

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

पंचांग

फरवरी महिने का पंचांग
Panchang of February Month

February 2014

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
						1 माघ सुदि 2
2 माघ सुदि 3	3 माघ सुदि 4	4 माघ सुदि 5	5 माघ सुदि 6	6 माघ सुदि 7	7 माघ सुदि 8	8 माघ सुदि 9
9 माघ सुदि 10	10 माघ सुदि 11	11 माघ सुदि 12	12 माघ सुदि 13	13 माघ सुदि 15	14 माघ सुदि 15	15 फाल्गुन वदि 1
16 फाल्गुन वदि	17 1फाल्गुन वदि 2	18 फाल्गुन वदि 3	19 फाल्गुन वदि 4	20 फाल्गुन वदि 5	21 फाल्गुन वदि 6	22 फाल्गुन वदि 7
23 फाल्गुन वदि	24 8फाल्गुन वदि 9/10	25 फाल्गुन वदि 11	26 फाल्गुन वदि 12	27 फाल्गुन वदि 13	28 फाल्गुन वदि 14	

फरवरी मास

फाल्गुन वदि 1 की वृद्धि

फाल्गुन वदि 10 का क्षय

09.02.14- रोहिणी तपाराधना

13.02.14- पाक्षिक प्रतिक्रमण

28.02.14- पाक्षिक प्रतिक्रमण

श्री अभिनंदन स्वामी जन्म कल्याणक	माघ सुदि 2	श्री धर्मनाथ दीक्षा कल्याणक	माघ सुदि 13
श्री वासुपूज्यस्वामी केवलज्ञान कल्याणक	माघ सुदि 2	जहाज मंदिर वर्षगांठ	माघ सुदि 14
श्री विमलनाथ जन्म कल्याणक	माघ सुदि 3	श्री जिनभद्रसूरि आचार्य पद	माघ सुदि 15-1475
श्री धर्मनाथ जन्म कल्याणक	माघ सुदि 3	श्री सुपार्श्वनाथ केवलज्ञान कल्याणक	फाल्गुन वदि 4
श्री विमलनाथ जन्म कल्याणक	माघ सुदि 3	श्री जिनप्रबोधसूरि दीक्षा दिवस	फाल्गुन वदि 5-1297
श्री विमलनाथ दीक्षा कल्याणक	माघ सुदि 4	श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरि दीक्षा दिवस	फाल्गुन वदि 5-1976
श्री जिनपद्मसूरि दीक्षा दिवस	माघ सुदि 5-1384	श्री सुपार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक	फाल्गुन वदि 7
श्री जिनसिंहसूरि आचार्य दिवस	माघ सुदि 5-1640	श्री सुपार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक	फाल्गुन वदि 7
श्री जिनआनंदसागरसूरि आचार्य पद	माघ सुदि 5-2006	श्री चन्द्रप्रभु केवलज्ञान कल्याणक	फाल्गुन वदि 7
श्री जिनउदयसागरसूरि दीक्षा दिवस	माघ सुदि 5-1988	श्री जिनप्रबोधसूरि आचार्य पद	फाल्गुन वदि 8-1331
श्री जिनेश्वरसूरि द्वितीय आचार्य पद	माघ सुदि 6-1278	श्री सुविधिनाथ च्यवन कल्याणक	फाल्गुन वदि 9
श्री जिनसागरसूरि दीक्षा दिवस	माघ सुदि 7-1661	श्री जिनपतिसूरि दीक्षा दिवस	फाल्गुन वदि 10-1218
श्री अजितनाथ जन्म कल्याणक	माघ सुदि 8	श्री आदिनाथ केवलज्ञान कल्याणक	फाल्गुन वदि 11
श्री अजितनाथ दीक्षा कल्याणक	माघ सुदि 9	श्री श्रेयांसनाथ जन्म कल्याणक	फाल्गुन वदि 12
श्री जिनलब्धिसूरि दीक्षा दिवस	माघ सुदि 11-1370	श्री मुनिसुव्रत स्वमी केवलज्ञान कल्याणक	फाल्गुन वदि 12
श्री जिनकृपाचन्द्रसूरि स्वर्गवास दिवस	माघ सुदि 11-1914	श्री श्रेयांसनाथ दीक्षा कल्याणक	फाल्गुन वदि 13
श्री अभिनंदन स्वामी दीक्षा कल्याणक	माघ सुदि 12	श्री वासुपूज्य स्वमी जन्म कल्याणक	फाल्गुन वदि 14

हार्दिक श्रद्धांजली

– श्री जैन श्वेताम्बर भंडार पावापुरी तीर्थ के अध्यक्ष माननीय श्री ताजबहादुरसिंहजी बैद की धर्मपत्नी सौ. श्रीमती शोभा जैन का 68 वर्ष की उम्र में 7 दिसम्बर 2013 को स्वर्गवास हो गया। कर्मठ, धर्म में सदा उद्यमशील एवं स्वाध्याय प्रिय सुश्राविका थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली!

– बाडमेर निवासी श्री सगतमलजी मालू की धर्मपत्नी श्रीमती हउआदेवी का स्वर्गवास हो गया। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली!

श्रीमती सुखीबाई भीमराजजी छाजेड़ परिवार आयोजित

नवाणुं यात्रा का अभिनव आयोजन

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव मरूधर मणि उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. पूज्य नूतन मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा. पूज्य नूतन मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. पूज्य नूतन बाल मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. आदि मुनि मंडल एवं पूजनीया खान्देश शिरोमणि गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्री सिद्धाचल गिरिराज पर नवाणुं यात्रा का अनूठा एवं ऐतिहासिक आयोजन गढ सिवाना-पूना निवासी श्रीमती सुखीदेवी भीमराजजी छाजेड परिवार द्वारा संपन्न हुआ।

पूज्य गुरुदेवश्री का चातुर्मास पालीताना में होने का ज्योंहि निश्चय हुआ त्योंहि छाजेड परिवार के हृदय में वर्षों का सपना साकार करने का भाव उपस्थित हुआ। छाजेड परिवार का पिछले लम्बे समय से पूज्यश्री की निश्रा में नवाणुं यात्रा कराने का भाव था। पर पूज्यश्री का विहार अन्य क्षेत्रों में होने के कारण यह संभव नहीं हो पा रहा था।

पूज्यश्री के 54वें वर्ष प्रवेश के मंगल अवसर पर छाजेड परिवार अपने परिवार व इष्ट मित्रों के साथ पादरू नगर पूज्यश्री से विनंती हेतु पहुँचा। पूज्यश्री ने ज्योंहि उनकी विनंती स्वीकार की, छाजेड परिवार अत्यन्त उल्लसित व आनंदित हो उठा।

नवाणुं यात्रा के आयोजन को चार चांद लगाने के लिये श्रीमती सुखीदेवी के सुपुत्र श्री इन्द्रकुमारजी, महावीरकुमारजी नरेन्द्रकुमारजी छाजेड दिन रात एक कर दिये। नवाणुं यात्रा के लिये तलेटी के समीप श्री कस्तूरधाम व नीलम विहार आदि धर्मशालाओं का आरक्षण किया। पत्रिका पोस्टर आदि द्वारा पूरे भारत के सकल श्री संघ को नवाणुं यात्रा में सम्मिलित होने के लिये आमंत्रण दिया गया।

पूज्यश्री ने चातुर्मास के मध्य कस्तूर धाम का अवलोकन कर आवश्यक सुझाव प्रदान किये। कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को पूज्यश्री ने साधु साध्वी मंडल एवं आराधकों के साथ नवाणुं यात्रा के लिये कस्तूरधाम में प्रवेश किया। कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा से नवाणुं यात्रा का प्रारंभ हुआ। लगभग 200 आराधकों के साथ बाजे गाजे के साथ तलेटी दर्शन करते हुए जय जय आदिनाथ एवं सिद्धाचल गिरि नमो नमः के गगन भेदी नारों के साथ नवाणुं यात्रा का प्रारंभ हुआ।

प्रारंभ में एक एक यात्रा करने वाले आराधकों ने कुछ ही दिनों के बाद दो दो और तीन तीन यात्राऐं करनी प्रारंभ कर दी। आराधकों में 8 साल का नन्हा मुन्हा जिनु गोलेच्छा भी था, 10 वर्ष का गौरव कवाड भी था तो 70 वर्ष के वयोवृद्ध श्रावक एवं श्राविकाऐं भी थी।

इन्होंने विधान के अनुसार डेढ कोसी, तीन कोसी, छह

कोसी परिक्रमा तो की ही, चौविहार करके छट्ठ अर्थात् बेला- लगातार दो दिन के उपवास करके सात यात्राऐं भी की। जो अचरज की बात थी। मन अनुमोदना के भावों से भर उठा।

आयोजक छाजेड परिवार को इस नवाणुं यात्रा में बोथरा परिवार की चार दीक्षाऐं कराने का अनूठा लाभ प्राप्त हुआ। ता. 20 नवम्बर को 42 वर्षीय मुमुक्षु श्री गौतमकुमारजी बोथरा, 36 वर्षीया उनकी धर्मपत्नी सौ. उषादेवी, उनके सुपुत्र 17 वर्षीय भरतकुमार, 13 वर्षीय आकाशकुमार बोथरा की भागवती दीक्षा का ऐतिहासिक आयोजन संपन्न हुआ। यह छाजेड परिवार के प्रचंड पुण्य का ही परिणाम था कि उसे चार-चार दीक्षाऐं कराने का छाजेड परिवार को लाभ मिला।

प्रतिदिन पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन होते। कुछ दिनों के बाद पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. सा. के प्रतिदिन प्रवचन होते। श्री सिद्धाचल के बारे में नई जानकारियां, इतिहास, भक्ति, संयम, जीवन की मूल्यवत्ता, आत्म-बोध आदि विविध विषयों पर जीवनोपयोगी और अध्यात्म की प्रेरणा देने वाले प्रवचनों से सभी आराधकों का हृदय परम संतुष्टि का अनुभव करने लगा।

प्रतिदिन शाम को होने वाली संध्या भक्ति का रंग अपूर्व होता था। पूज्य गुरुदेवश्री के भक्ति भाव भरे भजनों, स्तवनों के रसास्वादन का एक अनूठा अनुभव है। साथ ही पूजनीया साध्वीजी भगवंतों के सुमधुर कण्ठ से गाये जाते भजन सभी को तल्लीन बना देते।

ता. 26 से 30 दिसम्बर तक आयोजक श्रीमती सुखीदेवी भीमराजजी छाजेड के जीवित महोत्सव निमित्त पंचाह्निका महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके साथ ही पांच छोड का उद्यापन भी किया गया।

ता. 26 को आदिनाथ पंचकल्याणक पूजा के साथ महोत्सव का प्रारंभ हुआ। ता. 27 को वर्धमान शक्रस्तव महापूजन का अनूठा आयोजन हुआ। इसे पढाने के लिये मुंबई से ख्यातनाम साधक प्रवर श्री विमलभाई शाह पधारे थे। पूजन पढाने का उनका अद्‌भुत तरीका, शास्त्रीय संगीत के साथ मंत्रोच्चारण की उनकी पद्धति मन को झुमाने वाली थी। सभी ने इस महापूजन में अथाह आनन्द का अनुभव किया।

ता. 28 को श्री सिद्धचक्र महापूजन का आयोजन किया गया। श्री विमलभाई के दादा श्री बाबुभाई कडी वाले प्रतिदिन यह महापूजन आराधना के रूप में किया करते थे। उनकी साधना अनुमोदनीय थी। श्री विमलभाई भी अपने दादा के चरण चिन्हों पर चलने वाले साधक हैं। उन्होंने अत्यन्त भक्ति भाव व उल्लास से भर कर यह महापूजन पढाया।

ता. 29 को प्रात: साढे सात बजे श्री नाकोडा भैरव महापूजन आयोजित किया गया। 10:30 बजे जीवित महोत्सव के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पूज्यश्री जीवित महोत्सव की विशिष्ट व्याख्या की। उन्होंने कहा- अपने जीवन को महोत्सव बनाने का नाम जीवित महोत्सव है। संसार और संसार के समस्त साधनों से अपने आपको मानसिक रूप से अलग करना, आसक्ति हटा देना, यही जीवित महोत्सव का अर्थ है। जीवित महोत्सव करने के बाद का जीवन साधु की तरह हो जाना चाहिये। तभी मृत्यु महोत्सव होती है। जिसका जीवन महोत्सव होता है, उसकी मृत्यु भी महोत्सव हो जाती है।

श्रीमती सुखीदेवी के पुत्रों, पौत्रों आदि ने मिलकर एक सीडी तैयार की थी, जिसमें श्रीमती सुखी बाई के व्यक्तित्व और कृतित्व की विवेचना थी। लगभग 40 मिनट की उस वीडियो सीडी को देखकर सभी अनुमोदना के भावों से भर गये।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने कहा– आज श्री भीमराजजी छाजेड की स्मृतियाँ हमारे मन मस्तिष्क में तैर रही है। वे यदि आज जीवित होते तो कितने प्रफुल्लित होते। उनकी आत्मा देवलोक से अपने परिवार द्वारा हो रहे इस सुकृत्य को निहार रही होगी, और आनंद के अश्रु बहाती हुई अनुमोदना कर रही होगी।

शाम को साढे पांच बजे भव्य वरघोडे का आयोजन किया गया। तलेटी पर परमात्मा की भक्ति की गई। आयोजक छाजेड परिवार ने चढावा लेकर शत्रुंजय गिरिराज जय तलेटी की आरती का लाभ प्राप्त किया। रात्रि में भावना आचार्य संगीतकार द्वारा मातृ पितृ वंदना के कार्यक्रम ने सारी जनता की आंखों को भिगो दिया। परिवार ने मिलकर अपनी मां सुखीदेवी की आरती उतारी। नवाणुं यात्रा कर रही बालिकाओं ने नवाणुं यात्रा पर एक रंगारंग नाटिका प्रस्तुत की थी, जिसे देख सुन कर उपस्थित जनसमूह रोमांचित हो उठा। श्रीमती सुखीबाई भीमराजजी छाजेड के जीवित महोत्सव के उपलक्ष में सात क्षेत्र में 25 लाख रूपये तथा 11 लाख रूपये की राशि जीवदया में अर्पित की गई। आज के इस मंगल अवसर पर पधारे बाडमेर विधायक श्री मेवारामजी जैन का छाजेड परिवार की ओर से बहुमान किया गया।

ता. 30 दिसम्बर का मंगलमय दिवस एक नई रोशनी लेकर अवतरित हुआ। आज तीर्थमाला का कार्यक्रम था। प्रात: 10 बजे प्रारंभ हुआ यह समारोह दोपहर 3 बजे तक अनवरत चला। उल्लास चरम सीमा पर था। बाहर से बडी संख्या में अतिथिगणों, परिजनों, मित्रों का आगमन हुआ था। पूज्यश्री ने एक-एक विधि समझाते हुए तीर्थमाला का विधान करवाया। छाजेड परिवार ने पूज्यश्री एवं साध्वी मंडल को कामली बहोराई। चंदन के स्थापनाचार्यजी समर्पित किये।

बाद में शुभ मुहूर्त्त में तीर्थमाला धारण करवाई

गई। श्रीमती सुखीदेवी को तीर्थमाला पहिनाने का अनूठा लाभ चढावा लेकर संघवी श्री पारसमलजी बाबुलालजी प्रकाशकुमारजी भंसाली सिवाना वालों ने लिया। संगीत के दिव्य स्वरों एवं मंत्रोच्चारणों की दिव्य ध्वनि के साथ मालारोपण का विधान हुआ।

उनके बाद क्रमश: श्री इन्द्रकुमारजी, महावीरकुमारजी, कान्तिलालजी, नरेन्द्रजी, ललितजी आदि छाजेड परिवार को अभिमंत्रित माला धारण करवाई गई। इन सभी को माला धारण करवाने का लाभ उन उनके ससुराल वालों ने प्राप्त किया।

उसके बाद आराधकों की ओर से अभिनंदन किया गया। इसका लाभ श्री मांगीलालजी भंसाली सिवाना वालों ने लिया। श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट, पालीताना, सिवाना, पूणे आदि की कई विशिष्ट संस्थाओं ने छाजेड परिवार का अभिनंदन किया।

नाशिक दादावाडी प्रतिष्ठा 18 जून को

परम पूजनीया खान्देश शिरोमणि गुरुवर्या श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया विदुषी साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से नाशिक-इन्दौर मुख्य मार्ग पर नाशिक से 10 किमी की दूरी पर आडगांव में श्री धर्मचंदजी रांका एवं श्री चन्द्रशेखरजी सर्राफ द्वारा समर्पित मूल्यवान् भूखण्ड पर श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर, श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी एवं उपाश्रय, धर्मशाला, भोजनशाला आदि का निर्माण कार्य चल रहा है। इसमें विहार धाम के रूप में दो उपाश्रयों, धर्मशाला, भोजनशाला, कार्यालय, प्याऊ आदि का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है।

कच्छप के आकार में श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर एवं दादावाडी का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है। ता. 30 दिसम्बर 2013 को नाशिक श्री संघ एवं श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं दादावाडी ट्रस्ट ने पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. को अंजनशलाका प्रतिष्ठा कराने हेतु भावभरी विनंती की एवं मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया।

पूज्यश्री ने उनकी विनंती को स्वीकार करते हुए आषाढ वदि 6 ता. 18 जून 2014 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। जिसकी उद्घोषणा का लाभ चढावा लेकर हैदराबाद निवासी श्री कपूरचंदजी प्रकाशकुमारजी श्रीमाल के सुपुत्र श्री प्रशान्तकुमारजी श्रीमाल ने लिया। उन्होंने ज्योंहि इस शुभ मुहूर्त्त की घोषणा की, त्योंहि सकल संघ में विशेष रूप से नाशिक संघ में अत्यन्त आनन्द व उल्लास छा गया। पूज्यश्री ने इस अवसर पर फरमाया- संघ एवं ट्रस्ट मंडल की जिम्मेदारी बढ गई है। क्योंकि समय कम है। और कार्य अधिक है। नाशिक के सकल श्री संघ को इस प्रतिष्ठा से जोडना है। चाहे वे मंदिरमार्गी हो, स्थानकवासी हो, तेरापंथी हो, खरतरगच्छ हो चाहे तपागच्छ! परमात्मा सबके हैं। यह परमात्मा की प्रतिष्ठा है। इसके लिये आपको पूरी मेहनत करनी है। आज भी यह देखकर मैं आनन्दित हूँ कि विनंती करने के लिये सभी संप्रदाय वाले उपस्थित हैं। इस अवसर पर शिवसेना के मंत्री सुभाषजी घीया, ट्रस्टी श्री रमेश निमाणी एवं सौ. प्रीति जैन ने पूज्यश्री से विनंती की। श्री प्रशान्तजी ने सकल श्री संघ से प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर पधारने का हार्दिक निवेदन किया। नवाणुं आयोजक श्रीमती सुखीदेवी भीमराजजी छाजेड परिवार की ओर से नाशिक दादावाडी में अच्छा सहयोग अर्पण किया गया।

चार साध्वीजी म. ने नवाणुं की

छाजेड परिवार की ओर से आयोजित इस नवाणुं यात्रा के आयोजन में पू. छत्तीसगढ रत्न शिरोमणि श्री महत्तरा साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी म., पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री नूतनप्रियाश्रीजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री जिनज्योतिश्रीजी म. ने नवाणुं यात्रा संपन्न की। छाजेड परिवार की ओर से उनका अभिनंदन किया गया।

पालीताना में श्री कुंथुनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न

पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया संघरत्ना बंग देशोद्धारिका श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से तलेटी के पास बने श्री जिनेश्वरसूरि खरतरगच्छ भवन परिसर में नवनिर्मित श्री कुंथुनाथ जिन मंदिर, नवग्रह मंदिर एवं दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. आदि की पावन निश्रा में ता. 7 दिसम्बर मिगसर सुदि 5 को अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा अवसर पर धर्मशाला के उद्घाटन कर्ता श्री वीरेन्द्रमलजी आशिषकुमारजी मेहता चेन्नई से वायुयान से 400 व्यक्तियों का संघ लेकर पधारे। साथ ही भोजनशाला उद्घाटन कर्ता श्री कोठारी परिवार चेन्नई से 300 लोगों का संघ लेकर पधारे। प्रतिष्ठा के इस मंगलमय अवसर पर कोलकाता, टाटानगर, छत्तीसगढ, चेन्नई आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में श्रद्धालु भक्तों का पदार्पण हुआ।

ता. 30 नवम्बर 2013 से महोत्सव का प्रारंभ कुंभ स्थापना के साथ हुआ। ता. 6 दिसम्बर को भव्यातिभव्य वरघोडे का आयोजन किया गया। श्री साचा सुमतिनाथ जिन मंदिर से प्रारंभ हुई विविध मंडलियों से भरपूर यह शोभायात्रा अंजनशलाका मंडप में पहुँची। जहाँ दीक्षा कल्याणक मनाया गया।

चढावों का संचालन शासन रत्न श्री मनोजकुमारजी बाबुमलजी हरण ने किया। कायमी ध्वजा का लाभ बाडमेर-मालेगांव निवासी श्री डामरचंदजी चतुर्भुजजी छाजेड परिवार के श्री शांतिलालजी छाजेड ने लिया। उनकी सुपुत्री कुमारी सीमा छाजेड की दीक्षा का भी आज ही वरघोडा संपन्न हुआ। दीक्षा ग्रहण से पूर्व उसके हाथों से शिखर पर ध्वजा चढाई गई। परिवार ने एक अनूठा लाभ लिया।

रात्रि में अंजनशलाका का विधान दिव्य एवं अलौकिक वातावरण में संपन्न हुआ। ता. 7 दिसम्बर को शुभ मुहूर्त्त में प्रतिष्ठा संपन्न हुई। इस अवसर पर पूज्यपाद आचार्य श्री राजयशसूरीश्वरजी म.सा. आदि का पदार्पण हुआ।

कल्याणक कार्यक्रम में संगीतकार श्री नरेन्द्र वाणीगोता आये थे। जिन्होंने अपने विशिष्ट संगीत एवं मधुर स्वरों से शमां बांधा। प्रतिष्ठा के पश्चात् अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। पूज्य आचार्यश्री राजयशसूरिजी म., पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म., पू. श्री कुशलमुनिजी म. एवं साध्वी मंडल को कामली वहोराई गई। कामली वहोराने का लाभ श्री वीरेन्द्रजी मेहता एवं श्री तिलोकचंदजी बरडिया ने लिया। साथ ही संघ लेकर पधारे श्री वीरेन्द्रजी मेहता, श्री कोठारीजी, श्री बरडियाजी आदि का बहुमान किया गया। इस मंदिर के निर्माण में रात दिन एक करने वाले ट्रस्ट के महामंत्री जयपुर निवासी श्री फतेहसिंहजी बरडिया का बहुमान किया गया। पूजनीया साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. ने अपने वक्तव्य में लूणिया एवं दायमा परिवार का बहुमान करते हुए कहा- उन्होंने पूज्यश्री का चातुर्मास करवाया और हमें प्रतिष्ठा कराने का अनायास अवसर उपलब्ध हो गया। उन्होंने श्री फतेहसिंहजी बरडिया के पुरूषार्थ का अभिनंदन करते हुए कहा- इन्होंने स्वास्थ्य की अनुकूलता न होते हुए भी बार बार जयपुर से यहाँ आकर जिन मंदिर के कार्य को व्यवस्थित रूप से देखा। आपकी मेहनत की जितनी अनुमोदना की जाय उतनी कम है। ध्वजा का लाभ लेने वाले श्री शांतिलालजी छाजेड को कितना धन्यवाद दूं, जिन्होंने अपनी बेटी के लिये ध्वजा का इतना महान् लाभ लिया। ता. 8 को प्रातः द्वारोद्घाटन हुआ व सतरह भेदी पूजा के साथ कार्यक्रम पूर्ण हुआ।

महासमुन्द से श्री शिखरजी महातीर्थ पद यात्रा संघ का ऐतिहासिक आयोजन

जैन एकता की अनूठी मिसाल

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक वशीमालानी रत्न शिरोमणि बकेला तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. की परम पावन प्रेरणा से छत्तीसगढ से प्रथम बार श्री सम्मेतशिखरजी महातीर्थ का छह री पालित पद यात्रा संघ का ऐतिहासिक आयोजन प्रारंभ है।

इस संघ की सबसे बडी विशेषता है कि इस संघ को स्थानकवासी श्रमण संघ के छत्तीसगढ प्रवर्त्तक महाश्रमण लोकमान्य संत परम पूज्य श्री रतनमुनिजी म.सा. की भी निश्रा प्राप्त हो रही है।

पूज्य मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म. के शिष्य पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. एवं पूज्य रतनमुनिजी म.सा. के शिष्य सेवाभावी तरूण तपस्वी डॉ. पूज्य सतीशमुनिजी म.सा., मधुरगायक तपस्वी श्री शुक्लमुनिजी म., स्वाध्यायी श्री रमनमुनिजी म., विद्याभिलाषी पू. श्री आदित्यमुनिजी म. के साथ साथ स्थानकवासी सतियों की पावन सानिध्यता प्राप्त हो रही है।

पूज्य मुनिवरों ने इस संघ में सम्मिलित होकर सकल जैन संघ को जैन एकता का संदेश दिया है। संप्रदाय भले अलग अलग हो, पर नवकार हमारा एक है। तीर्थंकर हमारे एक हैं। उनके सम्मिलित होने से संपूर्ण छत्तीसगढ में एकता की लहर फैल गई है। सकल श्री संघ में अनूठा आनन्द छा गया है।

13 दिसम्बर 2013 को शुभ मुहूर्त्त में महासमुन्द से इस चतुर्विध संघ का पावन प्रस्थान हुआ। प्रस्थान के मांगलिक अवसर पर हजारों श्रद्धालुओं का आगमन हुआ।

200 से अधिक यात्री छह 'री' का पालन करते हुए तीर्थ यात्रा कर रहे हैं। रोजाना 200 से अधिक बाहर से दर्शनार्थियों का आगमन होता है। यह संघ 20 जनवरी 2014 को रांची पहुँचेगा। वहाँ से नेवरी, पांचागांव, जैनामोड, डुमरीमोड होता हुआ ता. 30 जनवरी 2014 को मधुवन शिखरजी पहुँचेगा। 31 जनवरी को तीर्थयात्रा होगी तथा 1 फरवरी को संघ माला तीर्थ माला का आयोजन होगा, उस अवसर पर हजारों श्रद्धालुओं का आगमन होगा।

नवाणुं माला 7 जनवरी को

श्री कुशल मुनिजी म.सा.

साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा.

पूज्य मुनिराज श्री जयानंदजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री कुशल मुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं प्रेरणादात्री पूजनीया संघरत्ना साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में गढ सिवाना निवासी श्रीमती फुलीदेवी मिश्रीमलजी भंसाली परिवार की ओर से नवाणुं यात्रा का आयोजन श्री जिनेश्वरसूरि खरतरगच्छ भवन में चल रहा है। माला महोत्सव 7 जनवरी 2014 को होगा।

इसी दिन पूज्य मुनिराज श्री कुशल मुनिजी म. के पास चारित्र ग्रहण करने जा रहे पाली निवासी डाकलिया परिवार को दीक्षा का मुहूर्त्त प्रदान किया जायेगा।

यह ज्ञातव्य है कि मूलत: ब्यावर वर्तमान में पाली निवासी श्री गौतमचंदजी डाकलिया के सुपुत्र श्री मनोजकुमारजी अपनी पत्नी सौ. मोनिकादेवी, पुत्र एवं पुत्री भागवती दीक्षा ग्रहण करने जा रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री दिव्यदर्शनाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री कनकप्रभाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री संयमप्रज्ञाश्रीजी म. पू. साध्वी श्री समकितप्रज्ञाश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल नवाणुं यात्रा कर रहे हैं। पू. साध्वी श्री सत्वबोधिश्रीजी म. ने हर सीढी पर खमासमणा देते हुए यात्रा संपन्न की।

छह री पालित संघ का आयोजन

परभणी निवासी मुथा श्री गुमानचंदजी कन्हैयालालजी मुथा परिवार द्वारा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में छह री पालित संघ का आयोजन ता. 18 जनवरी 2014 से 21 जनवरी 2014 तक किया जा रहा है। ता. 16 जनवरी को परभणी से बसों से प्रस्थान कर वे झघडियाजी आदि कई तीर्थों की यात्रा करते हुए ता. 17 जनवरी को शाम तक सभी गुणोदय धाम-सोनगढ पहुँचेंगे।

18 को पूज्य गुरु भगवंतों की निश्रा में छहरी पालित संघ के रूप में विहार कर राजेन्द्र धाम पहुँचेंगे। ता. 19 को अढी द्वीप रूकेंगे। ता. 20 जनवरी को पालीताना में नगर प्रवेश होगा। ता. 21 जनवरी को दादा के दरबार में ध्वजा चढाने के साथ तीर्थमाला संघपति माला का विधान होगा।

पालीताना में दो दीक्षाऐं संपन्न

श्री सिद्धाचल गिरिराज की पवित्र छत्र छाया में पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में बाडमेर निवासी कुमारी सीमा छाजेड एवं महासमुन्द निवासी श्रीमती कमलाबाई गटागट की भागवती दीक्षा ता. 8 दिसम्बर 2014 को विशाल जनमेदिनी के समक्ष संपन्न हुई।

दोनों पूजनीया संघ रत्ना श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्याऐं घोषित हुई। क्रमशः उन्हें साध्वी श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी एवं साध्वी शुद्धबोधिश्रीजी नाम दिया गया।

बडी दीक्षा संपन्न

पूजनीया साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया बाल साध्वी श्री भव्यपूर्णाश्रीजी एवं बाल साध्वी श्री कल्पपूर्णाश्रीजी तथा पूजनीया साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया नवदीक्षिता साध्वी श्री शुद्धबोधिश्रीजी म. एवं साध्वी श्री श्रमणीप्रज्ञाश्रीजी म. की बडी दीक्षा 12 दिसम्बर 2013 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में श्री सुखसागर समवशरण में प्रदान की गई।

पूज्यश्री ने बताया कि आगे मलमास निकट होने से बडी दीक्षा अपवाद रूप शीघ्र करवाई जा रही है।

कुशल वाटिका प्रथम वर्षगांठ 2 फरवरी को

बाडमेर में पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से अपनी गुरुवर्या प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की पावन स्मृति में निर्मित कुशल वाटिका परिसर स्थित श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर, नवग्रह मंदिर, दादावाडी आदि पर प्रथम ध्वजा ता. 2 फरवरी को माघ सुदि 3 को चढाई जायेगी।

यह समारोह पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की निश्रा में संपन्न होगा। 2 फरवरी को प्रातः सतरह भेदी पूजा पढाई जायेगी। अठारह अभिषेक होंगे तथा श्री मुनिसुव्रतस्वामी महापूजन पढाया जायेगा। इस अवसर पर वार्षिक पूजाओं के चढावे बोले जायेंगे।

सियाणी में भागवती दीक्षा

पूजनीया प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म.सा. के सानिध्य में सियाणी निवासी कुमारी पिंकी छाजेड की भागवती दीक्षा सियाणी में ही ता. 13 फरवरी 2014 को संपन्न होगी।

ग्रंथ विमोचन

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. की साहित्य लेखन यात्रा नित नये सोपान तय कर रही है। कुछ ही दिनों पहले जैन जीवन शैली (रंगीन) का दूसरा भाग प्रकाशित हुआ था। ता. 30 दिसम्बर 2013 को पालीताना में छाजेड परिवार के तीर्थमाला समारोह में पूज्यश्री द्वारा लिखित तीन ग्रन्थों का विमोचन किया गया। इन तीनों पुस्तकों में सोलह महासतियों का जीवन चरित्र एक नई परिकल्पना के साथ लिखा गया है। ये ग्रंथ रंगीन चित्रों से सुसज्जित आर्ट पेपर पर प्रकाशित हुए हैं। पहली सत्य का अमिट सौन्दर्य के विमोचन का लाभ हाडेचा निवासी श्रीमती टीपूदेवी तखतराजजी छाजेड ने लिया। शील के अमिट शिलालेख के विमोचन का लाभ नवाणुं यात्रा आयोजक परिवार श्रीमती सुखीदेवी भीमराजजी छाजेड परिवार ने तथा तीसरी पुस्तक समय के अमिट हस्ताक्षर के विमोचन का लाभ श्री मदनलालजी अनिलकुमारजी बैद परिवार इन्दौर द्वारा लिया गया।

पूज्यश्री द्वारा लिखित लाइफ मेनेजमेन्ट नामक लघु आकारीय पुस्तक की 10 हजार प्रतियों का वितरण हो चुका है। अभी 13 हजार प्रतियों का प्रकाशन किया गया है। यह पुस्तक जैन व जैनेतर समस्त समाज में बहुत लोकप्रिय हुई है। इन पुस्तकों का विमोचन नवाणुं यात्रा आयोजक परिवार श्रीमती सुखीदेवी भीमराजजी छाजेड परिवार द्वारा किया गया। साथ ही आयोजक परिवार की ओर से पंच प्रतिक्रमण सूत्र सार्थ प्रकाशित की गई है, उसका भी विमोचन किया गया।

जहाज मंदिर मांडवला द्वारा गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी सन् 2014 का कैलेण्डर प्रकाशित किया गया। उसका विमोचन भी आयोजक परिवार द्वारा किया गया।

- पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. पालीताना से 20 दिसम्बर को विहार कर ता. 31 दिसम्बर को अहमदाबाद पधारे हैं। दो दिनों की स्थिरता के पश्चात् विहार कर चितलवाना पधार कर छहरी पालित संघ में सम्मिलित होंगे।

- पूज्य मुनि श्री पीयूषसागरजी म. आदि ठाणा ने मेडचल तीर्थ की प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर जावरा की ओर विहार किया है। उनकी निश्रा में पूजनीया साध्वी श्री जिनशिशुप्रज्ञाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से बने अष्टापद तीर्थ की प्रतिष्ठा 13 फरवरी 2014 को संपन्न होगी।

- पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म., पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 7 पालीताना बिराज रहे हैं।

- पूज्य मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा की निश्रा में कैवल्यधाम में उपधान तप चल रहा है। जिसमें 191 तपस्वी आराधना कर रहे हैं।

- पूजनीया प्रवर्तिनी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म.सा. सूरत से विहार कर नंदुरबार पधारे हैं। पौष शुक्ल प्रतिपदा बेठते महिने की उनकी मांगलिक नंदुरबार में होगी। उनका आगामी चातुर्मास कोलकाता में होगा।

- पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गण रत्ना श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा कोलकाता से विहार कर श्री सम्मेतशिखरजी तीर्थ पधारे हैं। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् वाराणसी की ओर विहार करेंगे।

- पूजनीया साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा चेन्नई से विहार कर तिरूपातूर पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 1 फरवरी को को नवनिर्मित भवन उद्घाटन होगा तथा ता. 2 फरवरी को पू. साध्वी श्री नयनंदिता श्रीजी म.सा. के 500 आयंबिल का पारणा होगा।

- पूजनीया मरूधर ज्योति साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. ऋजुबालिका में चातुर्मास संपन्न कर शिखरजी पधारे हैं। ऋजुबालिका में आपकी प्रेरणा से केवलज्ञान कल्याणक मंदिर का निर्माण/जीर्णोद्धार हो रहा है।

- पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा पालीताना से विहार कर अहमदाबाद पधारे हैं। वहाँ से पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा विहार कर चितलवाना पधारेंगे। कुछ दिनों की संघ में सानिध्यता प्रदान कर बाडमेर की ओर विहार करेंगे। ता. 30 जनवरी को उनकी निश्रा में कल्याणपुरा मंदिर की होने वाली प्रतिष्ठा की जाजम के चढावे आयोजित होंगे। बाद में उनकी पावन निश्रा में माघ सुदि 3 ता. 2 फरवरी 2014 को कुशल वाटिका मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर की प्रथम वर्षगांठ मनाई जायेगी।

- पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा मुंबई से विहार कर हुबली पधारेंगे। जहाँ उनकी पावन प्रेरणा से श्री आदिनाथ जिन मंदिर दादावाडी का निर्माण हो रहा है। जिसकी प्रतिष्ठा आगामी चातुर्मास के बाद संपन्न होगी।

- पूजनीया धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा ने हैदराबाद में यशस्वी चातुर्मास संपन्न कर श्री सुखसागर एपार्टमेंट स्थित जिन मंदिर की वर्षगांठ महोत्सव को अपनी पावन निश्रा प्रदान कर श्री कुलपाकजी तीर्थ की ओर विहार किया है। वहाँ से वे विजयवाडा होते हुए गुन्टुर की ओर विहार करेंगे। आपका चातुर्मास बैंगलोर-बसवनगुडी में निश्चित हुआ है।

- पूजनीया खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. ठाणा 3 ने पालीताना से अहमदाबाद, बडौदा, खान्देश होते हुए नाशिक की ओर विहार किया है। जहाँ आपकी प्रेरणा से जिन मंदिर, दादावाडी एवं विहार धाम का निर्माण हो रहा है। प्रतिष्ठा 18 जून को होगी।

- पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 पालीताना से 21 जनवरी 2014 को विहार करेंगे। वे अहमदाबाद, सूरत, पूना होते हुए बैंगलोर पधारेंगे।

- पूजनीया साध्वी श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म.सा. ईरोड से विहार कर तिरूपातूर पधारेंगे।

विधायक श्री मेवारामजी जैन का बहुमान

बाडमेर क्षेत्र से कांग्रेसी विधायक श्री मेवारामजी जैन ने पालीताना तीर्थयात्रा कर परमात्मा आदिनाथ की पूजा अर्चना की। उन्होंने कस्तूरधाम में बिराजमान पूज्यपाद गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के दर्शन किये। श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट की ओर से उनका हार्दिक अभिनंदन किया गया।

श्री मुनिसुव्रतस्वामिने नमो नमः

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिसद्गुरुभ्यो नमः

पू. गणनायक श्री सुखसागर-जिनकान्तिसागरसूरिसद्गुरुभ्यो नमः

पू. प्रवर्तिनी श्री प्रमोदगुरुवर्यायै नमः

बाडमेर नगर की तपोभूमि शिक्षाभूमि

कुशल वाटिका

श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर, नवग्रहमंदिर, दादावाडी प्रतिष्ठा की

प्रथम वर्षगांठ प्रसंगे

सादर आमंत्रण

शुभ आशीर्वाद

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

पावन निश्रा

कुशल वाटिका प्रेरणादात्री पूजनीया बहिन म.

डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

शुभ मुहूर्त

वि. सं. 2070 माघ सुदि 3

रविवार ता. 2 फरवरी 2014

इस ऐतिहासिक अवसर पर आप सभी से
पधारने का हमारा हार्दिक अनुरोध है।

निवेदक

श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम ट्रस्ट

कुशल वाटिका

बाडमेर- 344001 राज.

93 जहाज मन्दिर पहेली

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

प्रस्तुत पहेली में दो प्रतिक्रमण सूत्रों के मांगलिक शब्द दिए गए हैं। उनमें केवल काना-मात्रा रूप अलंकार गायब हो गये हैं। अतः समुचित काना मात्रा लगावे एवं शब्द किस सूत्र से संबद्ध है, उसका उल्लेख करे -

शब्द	शुद्ध शब्द	सूत्र का नाम
1. जरवल्ल-	जीरावल्ली	श्री सेढी चैत्यवंदन
2. बहसभण	.....	.....
3. नसहय	.....	.....
4. जंबदव	.....	.....
5. सहगरजग	.....	.....
6. सरसरण	.....	.....
7. मल्लल्लरण	.....	.....
8. पज्यमन	.....	.....
9. मनवर	.....	.....
10. मनवर	.....	.....
11. बहलभवत्तअए	.....	.....
12. नमक्करण	.....	.....
13 शकननं	.....	.....
14. बधव्व	.....	.....
15. मणसव्वयं	.....	.....
16. गरहम	.....	.....
17. परयवय	.....	.....
18. परहणं	.....	.....
19. पसयन्त	.....	.....
20. सत्त्वनम्	.....	.....
21. चन्तमण	.....	.....

22. दणव .....

23. कल्लण .....

24. इच्छम .....

25. भसज्ज .....

26. परदर .....

27. पणइवय .....

28. दवह .....

29. कलंगस .....

30. वहव्व .....

31. ववरय .....

32. पणसणइ .....

33. वसरय .....

34. अलअण .....

35. अरहणए .....

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 फरवरी तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल मार्च में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर जहाज मंदिर में छपे फार्म में ही भरकर भेजे। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकार नहीं की जायेगी।
7. प्रेषक पहेली का उत्तर जहाज मंदिर पत्रिका के कार्यालय पर भारतीय डाक से ही पोस्ट करें।
8. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
9. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-

शा. सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया (छबड़ा) ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | |

जहाज मंदिर पहेली 90 का सही उत्तर

1. सिरसा	2. पणमामि	3. नमामि	4. कल्लाण	5. पावइ
6. तिहुअण	7. सुन्दरीहिं	8. अभयदेउ	9. अजिअं	10. महामुणि
11. अप्पाणं	12. दाविय	13. लुलिय	14. जंताइ	15. सिलोगो
16. भुंजइ	17. नंदिसेण	18. थंभेइ	19. भसल	20. रइकर
21. खएण	22. लीणउ	23. कमल	24. रिसीहिं	25. जिणेस
26. केवल	27. नाहिण	28. सासण		

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- मनोहरी देवी बाफना-नंदुरबार।

छह प्रेरणा पुरस्कार-

सुशीला भण्डारी-कोटा, प्रज्ञा जैन-रायपुर, पुष्पलता नाहटा-जयपुर,
मोनिका घीया-अमलीपदर, मनीषा लूणिया-ऊंटी, नरेन्द्र कोचर-भायन्दर।

प्राप्त उत्तर पत्र- साध्वी श्री विशालप्रभाश्रीजी, मयणरेखाश्रीजी, दिव्यदर्शनाश्रीजी, हेमरत्नाश्रीजी।

इनके उत्तर पत्र सही थे- मधु खवाड-मदनगंज, चन्द्रसिंह जैन-उदयपुर, चित्रा झाबक-बड़ौदा, भूरचंद मालू-जोधपुर, भीमराज छाजेड़-जोधपुर, मधु जैन-जयपुर, विजय संकलेचा-मालपुरा, पिस्ता गोलेछा-जयपुर, शिखा डागलिया-जयपुर, तारा कोठारी-भायन्दर।

इनके उत्तर पत्र त्रुटिपूर्ण थे- अनिता महमवाल-कोलकाता, शैली जैन-रायपुर, चन्द्रकान्ता जैन-जयपुर, राजेश्वरी संकलेचा-अमलीपदर, कलावती बरडिया-महासमुंद, सोहन झाबक-बडौदा, विमला संकलेचा-हैदराबाद, जयश्री कोठारी-भायन्दर, रजनी जैन-जयपुर, प्रियंका कवाड़-तिरूपात्तुर, विशाल-माण्डवला, राहुल-माण्डवला, भावना नाहटा-शहादा, विशाल छाजेड़-जोधपुर, प्रमिला मेहता-जयपुर, स्नेहलता चौरडिया-जयपुर, मीनाक्षी-भंवरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, विमला गोखरू-अजमेर, भंवरी देवी गोलेछा-ऊंटी, जयश्री कोठारी-ऊंटी, भाग्यवंती नाहटा-सुन्दरीबाई राखेचा-त्रिची।

चेन्नई धर्मनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार

चेन्नई में श्री जिनदत्तसूरि मंडल द्वारा संचालित श्री धर्मनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार कराना तय किया गया। इस हेतु जीर्णोद्धार उद्घोषणा का शुभ मुहूर्त रखा गया। इस मुहूर्त के अवसर पर ही लगभग ढाई करोड रूपये की राशि भक्तों द्वारा प्राप्त हो गई। मूलनायक परमात्मा श्री धर्मनाथ प्रभु का उत्थापन किये बिना ही यह जीर्णोद्धार संपन्न होगा।

- पूज्य मुनि श्री मणिरत्नसागरजी म.सा. मुंबई से विहार कर शंखेश्वर पधार गये हैं। वहाँ से वे सांचोर पधारेंगे। जहाँ कुछ दिनों की स्थिरता के बाद बाडमेर होते हुए सियाणी पधारेंगे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में कुमारी पिंकी छाजेड की भागवती दीक्षा होगी।

जहाज मंदिर 'मासिक' के माननीय संरक्षक

✟ श्रीग ोविन्दचन्दजी,र ाजेशजी,र ाकेशजीम ेहता,ज ोधपुर–मुम्बई

✟ डॉ.य ू.सी.ज ैन,अ जयजी,स ंजयजील षितजीज ैन,प ार्थ जैन,उ दयपुर

✟ श्रीम ाणकचंदज ी,ग ौतमचंदज ीच ौपड़ा,ब यावर

✟ श्रीस ंजयकुमारज ी,क निष्ठकुमारज ीब रडिया,ब यावर

✟ श्रीअ ोमप्रकाशज ीज ैन(ओमज ीद वाईवाला),ब यावर

✟ श्रीउ गमराजजी,स ुरेशकुमारज ीम ेहता,ब यावर

✟ सेठश्र ीश ंभुमलजीब लवन्तजी,य शवंतजीर ांका,ब यावर

✟ श्रीम दनलालजी,द ीपचंदजीक ोठारी,ब यावर

✟ श्री फतेहलालजी,सुल्तानजी,लक्ष्मणजी,आजादजी,संजयजी सिंघवी, उदयपुर

✟ श्रीम ोहनसिंहजीप ुत्रर ाजीवप ौत्रि चिरागद लाल,स ुराणा, उदयपुर

✟ श्रीस ुधीरजीच ावत,उ दयपुर

✟ श्रीि कस्तुरचन्दज ी,छ गनलालज ीच ौपड़ा,र तलाम

✟ श्रीि करणमलज ीस ावनसुखा,उ दयपुर

✟ श्रीमतीश ाान्तिम ेहताध ा.प.श्र ीि वजयसिंहजीम ेहता, उदयपुर

✟ श्रीक ुरीचन्दजी,च न्दनमलजीम लासिया,ऋ षभदेव

✟ श्रीद ौलतसिंहजी,प्र तापसिंहज ीग ाँधी,उ दयपुर

✟ श्रीि वमलचंदज ीस ौ.म ेमबाईसास ुराणा,ज यपुर

✟ श्रीि कशनचन्दज ीब ोहरा,स ौ.स ुधाद ेवी,ज यपुर

✟ श्रीक नकजीश्र ीमाल,ज यपुर

✟ श्रीभ ँवरलालजी,ल लितकुमारज ीस ंखलेचा,प ादरू–चैन्नई

✟ श्रीश ंकरलालज ीब ाफना,उ दयपुर

✟ श्रीमतीश ाांताद ेवीज ुहारमलज ीग ेलड़ा,उ दयपुर

✟ श्रीव ंसराजजी,ि मश्रीमलजीप ालरेचा,भरतव ाला,म ोकलसर

✟ श्रीम ीठालालजी,अ मीचंदजीप ालरेचा,भ ारतवाला,मोकलसर

✟ श्रीम ुन्नीलालज ीड ागा,ज यपुर

✟ श्रीस म्पतराजज ीग ादिया,ब ंगलौर

✟ श्रीअ ासुलालजी,म ांगीलालजी,ब ाबूलालजीड ोशी,च ौहटन, (बाड़मेर)

✟ श्रीि रखबचंदजी,प्र काशचन्दज ीस ेठिया,च ौहटन(बाड़मेर)

✟ श्रीश ीतलदासजी,ि वरेन्द्रकुमारज ीर ाक्यान,न ईि दल्ली

✟ श्रीज्ञ ानचन्दजी,महेन्द्रक ुमारज ीम ेघा,नईि दल्ली

✟ श्रीन गराजजी,प वनराजजी,अ शोककुमारजीम ेहता,उदयपुर

✟ घोड़ाश्र ीस ुमेरमलजी,म ोतीलालजी,ब ाबूलालजी श्रीश्रीमाल,क ेशवणा

✟ श्रीप वित्रकुमारज ी,स ुनीलज ी,ग ुनीतज ीब ाफना,क ोटा–नईि दल्ली

✟ श्रीअ रुणकुमारज ी,ह र्षाजीह र्षावत,न ईि दल्ली

✟ श्रीर ाजकुमारजी,अ ोमप्रकाशजी,र मेशकुमारजीच ौरड़िया, नईि दल्ली

✟ श्रीम ोतीचन्दज ी,श्र ीमतीअ ाभादेवीप ालावत,न ईि दल्ली

✟ श्रीि वरेन्द्रजी,र ाजेन्द्रजीअ भिषेकजी,आदित्यजी,प ीयूषजी मेहता,ि दल्ली

✟ श्रीअ ार.म फतलाल,स ौभागबेनच न्दन,च ैन्नई

✟ श्रीि चन्तामणदासज ी,त गामलज ीब ोथरा,ब ाड़मेर

✟ मूथाश ाा.न ेनमलज ी,प न्नालालज ीस ोनवाड़िया,म ांडवला

✟ श्रीमतीश ाांताबेन,ह रकचन्दज ीब ोथरा,स ांचोर

✟ श्रीभ ंवरलालज ी,ब ाबूलालज ीप ारख,ज ीवाणा

✟ श्रीम ूलचंदज ीब ख्तावरमलज ीब ाफना,ह ीराणी,प ादरू

✟ श्रीमतीप्र ेमलताजी,श्र ीच न्द्रराजज ीि संघवी,ज ोधपुर

✟ श्रीि रखबचंदज ी,र ाहुलक ुमारज ीम ेघा,न ईि दल्ली

✟ श्रीअ नूपचन्दजी,अ निल,अ शोक,अ जयक ोठारी,र ायपुर

✟ श्रीअ शोकक ुमारज ी,श्र ीमतीच ंदादेवीज ैन,न ईि दल्ली

✟ श्रीमतीन ीलमजीि संघवी,न ईि दल्ली

✟ श्रीश ीतलदासज ी,ि जतेन्द्रक ुमारज ीर ाक्यान,न ईि दल्ली

✟ श्रीमतीि वजयादेवी,ध ीरजब हादुरसिंहजीद ुग्गड़,न ईि दल्ली

✟ श्रीब ाबूलालज ी,ह रखचन्दज ीछ ाजेड़(सी.टी.सी.),च ेन्नई

✟ श्रीस ुरेन्द्रमलज ी,ग जेन्द्रज ी,ध र्मेन्द्रज ीप टवा,ज ालौर

✟ श्रीप ारसमलज ी,भ ाानमलज ीछ ाजेड़,म ांडवला–मुम्बई

✟ संघवीक ानमलजी,ब ाबूलालजी,न ेमीचंदजी,अ शोकजी गोलेछा,ज ीवाणा–चेन्नई

✟ स्व.ह स्तीमलज ीछ ोगाजी,ि हरोणीर ेवतडा–चेन्नई

✟ श्रीमती जतनबाई धर्मपत्नी स्व. मेहताबचंद जी गोलेछा, जयपुर

✟ श्रीमतीस रोज,फ तेहसिंहजी,ि सद्धार्थजीब रड़िया,ज यपुर

✟ श्रीप ुखराजज ी,ह स्तीमलज ीप ालरेचा,ब ैंगलोर

✟ श्री कुशलचंदजी, पारसकुमारजी, सतीशकुमारजी मेड़तवाल, ब्यावर

✟ श्रीि दलीपज ीछ ाजेड़,ख ाांचरोद,उ ज्जैन

✟ श्रीप ारसमलज ी,च ंपालालज ीछ ाजेड़,ि सवाना–हैदराबाद

✟ श्रीन ेमीचन्दजीश यामस ुन्दरजी,ब ेदमुथा,र ायपुर

✟ श्री जुगराजजी, रमेशजी, उत्तमजी, महेन्द्रजी छाजेड़ सिवाना–मदुराई

✟ श्रीमतीइ न्द्राम हेशजीज ैन(नाहटा)न ईि दल्ली

✟ श्रीब ी.एम.ज ैनल क्ष्मीनगर,ि दल्ली

✟ श्रीन ेवलचन्दजीम ोहनलालजीज ैन,ग ाजियाबाद

✟ श्री घनश्यामदासजी, नवीनजी, सुशीलजी, सुनीलजी जैन, नई दिल्ली

✟ श्री शांतिलालजी जैन दफ्तरी, नई दिल्ली

✟ श्री शांतिप्रकाशजी, अशोक कुमार, प्रवीण सिंधड़, अनूप शहर, नई दिल्ली

✟ श्रीमती भारतीबेन, शांतिलालजी चौधरी, नई दिल्ली

✟ श्री सुमेरमलजी, मिश्रीमलजी बाफना, मोकलसर–दिल्ली

✟ श्री भीकमचन्दजी, बाबूलालजी, तोगमलजी गोलेछा, पादरू–हैदराबाद

✟ श्री रूपचन्दजी, नरेन्द्र, देवेन्द्र, नमनजी भंसाली, हालावाले–जयपुर

✟ श्री खीमचन्दजी, अशोक कुमारजी, कंकू, चौपड़ा, जीवाणा–बैंगलोर

✟ श्री प्रकाशकुमार, अंकित कुमारजी जीरावला, सूरत

✟ शा. जेठमलजी, आसकरणजी गुलेच्छा, फलोदी–चैन्नई

✟ श्री द्वारकादासजी, पीयुषजी, अनिलजी, भरतजी, महावीरजी डोशी, चौहटन

✟ श्रीमती पुष्पाजी ए., केतनजी, चेतनजी जैन पाली–मुम्बई

✟ मै. राखी वाला, चैन्नई

✟ श्री दुलीचन्दजी, धर्मेश कुमारजी टॉक, जयपुर

✟ श्री महरचन्दजी मनोज कुमारजी, धांधिया, जयपुर

✟ श्री मनमोहनजी अनुपजी बोहरा, जयपुर

✟ श्री जितेन्द्रजी, नवीन, अजय, नितीन मेहमवाल, (श्रीमाल), जयपुर

✟ श्री राजेन्द्र कुमारजी, संजयजी, संदीपजी छाजेड़, जयपुर

✟ श्री इन्द्रचन्दजी, विमलचन्दजी, पदमचन्दजी, ज्ञानचन्दजी भण्डारी, जयपुर

✟ श्री विमलचन्दजी, महावीर चन्दजी पंसारी, जयपुर

✟ श्री पारसमलजी, पंकज कुमारजी गोलेछा, जयपुर

✟ श्री शांतिचन्दजी, विमलचन्दजी, पदमचन्दजी, पुंगलिया, जयपुर

✟ श्री हुकमीचन्दजी, विजेन्द्रजी, पूर्णेन्द्रजी, कांकरिया, जयपुर

✟ श्री ताराचन्दजी, विजयजी, अशोकजी, राजेन्द्रजी, संचेती, जयपुर

✟ श्री भीमसिंहजी, तेजसिंहजी खजांची, जयपुर

✟ श्री सौभागमलजी, ऋषभ कुमारजी चौधरी, जयपुर

✟ श्री संतोषचन्दजी, विजयजी, अजयजी, झाड़चूर, जयपुर

✟ श्री हरकचन्दजी, सेवन्तीजी, जितेन्द्रजी, विनोदजी, राजेशजी शाह, सांचोर

✟ श्री चन्द्रसिंहजी, विपुल कुमारजी, सुराणा–दिल्ली

✟ श्री मदनलालजी, रायचन्दजी, शंखलेशा, रामा–कल्याण

✟ श्री टीकमचन्दजी, हीराचन्दजी छाजेड़, उज्जैन

✟ श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्रजी, ज्ञानचन्दजी गोलेछा, जयपुर

✟ श्री लक्ष्मीचन्द हलवाई पुत्र श्री जेठमलजी अग्रवाल, जोधपुर

✟ श्री मीठालालजी, मनोज कुमार, गुणेशमलजी भंसाली, उम्मेदाबाद – बैंगलोर

✟ श्री उमेश कुमारजी, मुकेश कुमारजी तातेड़, रायपुर

✟ श्री बाबूलालजी शर्मा (राकांवत डेकोरेटर्स), तखतगढ़, पाली

✟ श्री रतनचन्दजी, सौ. निर्मला देवी बच्छावत, फलोदी

✟ श्री उमरावचन्दजी, प्रसन्नचन्दजी, किशनचन्दजी, डागा, जयपुर

✟ श्री बाबूलालजी, रमेश, अशोक लूंकड़, मोकलसर–इचलकरंजी

✟ श्री कानसिंहजी, मधुसूदन, सुदर्शन, संजय चौधरी कोठियां, भीलवाड़ा

✟ श्री नथमलजी, भंवरलालजी, सौ. किरणदेवी पारख, लोहावट

✟ श्री रतनलालजी, विनोद कुमार, गौतम कुमार बोहरा, हाला वाले, बाड़मेर

✟ श्री मनोहरमलजी, दलपत कुमार, महेश, हरीश, नाहटा, हाला वाले, फालना

✟ श्री खूबचन्दजी, चन्दनमलजी, बोहरा, हाला वाले फालना

✟ श्री आनन्द कुमारजी, कांतिलाल, प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, हाला वाले बैंगलोर

✟ श्री रतनलालजी, अतुल, अमित, श्री श्रीमाल, हाला वाले जयपुर

✟ श्री जीवनसिंहजी, दीपक कुमार, राजेश कुमारजी लोढ़ा, गुरलां –भीलवाड़ा

✟ श्री प्रेमसिंहजी, राजेन्द्र कुमार, नरेन्द्र कुमारजी बोहरा, गुरलां–भीलवाड़ा

✟ श्री भॅवरलालजी, बलवन्तसिंहजी मेहता, गुरलां–भीलवाड़ा

✟ श्री लक्ष्मीचन्दजी केसरीमलजी चण्डालिया कोटा

✟ श्री इन्द्रचन्दजी गौतमचन्दजी चौपड़ा, बिलाड़ा–हैदराबाद

✟ श्री बलवन्तसिंहजी, करणसिंह, सुरेन्द्र सिंह पारख, उदयपुर

✟ श्री पूनमचन्दजी, नैनमलजी मरड़िया, डंडाली–अहमदाबाद

✟ श्री माणकमलजी,मांगीलाल, नरेशकुमारजी धारीवाल, चौहटन – अहमदाबाद

✟ श्री महताबचन्दजी, विशालकुमारजी बांठियां, जयपुर–मुंबई

✟ श्री आसूलालजी, ओमप्रकाशजी, संकलेचा, बाड़मेर

✟ श्री मोतीचन्दजी, फोजमलजी झाबक, बड़ौदा

✟ श्री चम्पालालजी झाबक परिवार, बड़ौदा

- सौ. रूपाबाई गुलाबचन्दजी चौरड़िया, खापर
- श्री लालचन्दजी, कानमलजी, गुलेच्छा, अक्कलकुआ
- श्री लूणकरणजी, घीसुलालजी, सौ. चन्द्रादेवी सेठिया, तलोदा
- मुथा चन्दनमलजी, महेन्द्र कुमारजी तातेड़, पादरू, नंदुरबार
- श्री ज्ञानचन्दजी, रामलालजी लूणिया–अजमेर
- श्री अभयकुमारजी, अशोक कुमार, अनूप कुमार पारख–जयपुर
- शा. भंवरलालजी,कमलचन्द,रिषभ,गुलेच्छा, मुम्बई
- श्री त्रिलोकचन्दजी, प्रेमचन्दजी, सिंघी, जयपुर
- श्री पारसमलजी वी. जैन, सांचोर–बडोदरा
- श्री प्रेमचन्दजी संतोकचन्दजी गुलेच्छा, खापर
- श्री रामरतनजी नरायणदासजी छाजेड़, केशवणा–डोम्बीवल्ली
- श्री मोतीलालजी ओसवाल, पादरू–मुम्बई
- श्री अतुलजी हनवंतचन्दजी भंसाली, जोधपुर–मुम्बई
- श्री महेन्द्रकुमारजी, शेषमलजी, दयालपुरा वाले, मुम्बई
- श्री पारसमलजी, मांगीलालजी लूणावत, खेतिया
- संघवी श्री पूनमचंदजी पुखराजजी छाजेड़, पादरू–मुम्बई–चैन्नई
- श्री लाधमलजी मावाजी मरड़िया, चितलवाना
- श्री मिश्रीमलजी चन्दाजी मरड़िया, सांचोर
- श्री कन्हैयालालजी, भगवानदासजी डोसी–मुम्बई
- श्री रिखबचन्दजी जैन – मुम्बई
- श्री भंवरलालजी, हस्तीमलजी कोचर–अक्कलकुंआ
- श्री रमेशचन्दजी, सुशीलकुमारजी बच्छावत, फलोदी (राज.)
- श्री प्रमोदकुमारजी, बंशीलालजी भंसाली, खेतिया (म.प्र.)
- श्री कानूगो प्रकाशमलजी छगनलालजी बोथरा, सांचोर
- श्री बाबूलालजी मालू–सूरत
- श्री प्रेमचंदजी गेमरमलजी छाजेड़–बाड़मेर–सूरत
- श्री चतुर्भुजजी विजयराजजी श्रीश्रीमाल – फालना–मुंबई
- श्री भवँरलालजी विरदीचन्दजी छाजेड़ – हरसाणी –मुंबई
- श्री भंवरलालजी, नेमीचन्दजी, संघवी कटारिया, पादरू
- श्री जगदीश चन्द, नितेश कुमार एण्ड कम्पनी, इचलकरंजी
- श्री देवीचंदजी छोगालालजी वडेरा, बाड़मेर–इचलकरंजी
- श्री बाबूलालजी ओमप्रकाशजी पारसमलजी छाजेड़, बाड़मेर–इचलकरंजी
- श्री संपतराजजी लूणकरणजी संखलेचा, बाड़मेर–इचलकरंजी
- श्री मांगीलालजी खीमराजजी छाजेड़, रामसर–इचलकरंजी
- श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़, हरसाणी वाले इचलकरंजी
- श्री ओमप्रकाशजी मुलतानमलजी वैद मुथा कवास वाले, इचलकरंजी
- श्री छगनलालजी देवीचंदजी मेहता, बाड़मेर–इचलकरंजी
- श्री अशोककुमारजी सुरतानमलजी बोहरा, भिंयाड़–इचलकरंजी
- श्री मिश्रीमलजी विजयकुमार रणजीत ललवानी, सिवाना–इचलकरंजी
- श्री शिवकुमार रिखबचंदजी ललवानी, सिवाना–इचलकरंजी
- स्व. रूपसिंहजी मदनसिंह रतनसिंह राजपुरोहित–इचलकरंजी
- श्री फरसराजजी रिखबदासजी सिंघवी, बाड़मेर–इचलकरंजी
- श्री किशनलालजी, हसमुख कुमार, मिलापजी, भंसाली, खेतिया
- श्रीमती मानकुँवरबाई गेनमलजी भंसाली, खेतिया–नासिक
- शा. भीकचंदजी धनराजजी देसाई, सिणधरी–मल्हार पेठ
- श्री वरदीचंदजी पंकजकुमारजी, महावीरकुमारजी बाफना, बैंगलोर
- स्व. दाड़मी देवी, श्री पुखराजजी बोथरा, सांचोर
- श्री घनश्यामदास, दीपककुमारजी पारख, हालावाले जयपुर
- श्री हीराचंदजी मांगीलालजी बागरेचा, सिवाना–इचलकरंजी
- संघवी श्री हंसराजजी,रमेशजी सुरेशजी पुत्र श्री मोहनलालजी मूथा,मांडवला
- शा. घेवरचंदजी शंकरलालजी साकरिया, सांडेराव–बैंगलोर
- श्री पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा, मोकलसर–बैंगलोर
- श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोककुमारजी बोथरा, बैंगलोर
- श्री छगनलालजी शांतिलालजी लूणावत, शांतिनगर, बैंगलोर
- मिस्त्री मोहनलाल आर.लोहार, पो.चांदराई वाया गुडाबालोतान जि. जालोर
- शा. सज्जनराजजी रतनचंदजी मुथा, बैंगलोर
- श्री तेजराजजी मनोजकुमारजी आनन्दकुमारजी मालाणी, मोकलसर–बैंगलोर
- शा. मूलचन्दजी किरण अरूण विक्रम पुत्र पौत्र मिश्रीमलजी भंसाली , सिवाना–बैंगलोर
- श्री कन्हैयालालजी सुभाषचंदजी नरेशचंदजी रांका, चैन्नई
- श्री अरूण कुमारजी, बापूलालजी डोसी, इन्दौर
- श्री राजेन्द्र कुमार, राणुलालजी डागा, अक्कलकुआ
- शा. मोतीलाल एण्ड सन्स, इंचलकरंजी
- श्री प्रवीण कुमार पृथ्वीराजजी ललवानी, इंचलकरंजी
- श्री भंवरलालजी देवाजी पालगोता चौहान,बैंगलोर
- श्री पारसमलजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
- श्री जुगराजजी घेवरचंदजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
- श्री कन्हैयालालजी ओटमलजी छगनलालजी सुजली रांका, बैंगलोर

- श्री गेनमलजी हरकचंदजी लूणिया, बैंगलोर
- श्री मोटमलजी कानमलजी सदानी, बैंगलोर
- संघवी शा. समरथमलजी सोनाजी रांका, उम्मेदाबाद–चेन्नई
- श्री सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया, चेन्नई
- श्री मूलचंदजी मिश्रीमलजी बुर्ड, सांचोर–मुम्बई
- श्री पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टांटिया, जोधपुर–चेन्नई
- शा. गिरधारीलालजी बादरमलजी संखलेचा, पादरू–चेन्नई
- श्रीमती कमला देवी प्रकाशचंदजी लोढ़ा, चैन्नई
- श्री पदमचंदजी दिनेशकुमार जी कोठारी, चैन्नई
- मै. एम. के कोठारी एण्ड कम्पनी, चैन्नई
- श्री वीरेन्द्र मलजी आशीषकुमार मेहता वडपलनी–चैन्नई
- श्री एस. मोहनचंदजी ढ़ड्ढा, चैन्नई
- श्रीमती कमला देवी मूलचंदजी गोलेच्छा, फलोदी–चैन्नई
- श्री माणकचंदजी धर्मचंदजी गोलेच्छा, फलोदी–चैन्नई
- शा. लालचन्दजी कान्तीलालजी छाजेड़, गढ़ सिवाना–चैन्नई
- श्री रूपचन्द, जवेरीलालजी गोलेछा, ढालूवाले, पादरू
- श्री जुगराजजी (सी.ए.) कैलाशजी दिनेशजी चौधरी, जालोर–भायंदर (मुं)
- श्री पुखराजजी आसुलालजी बोहरा, बाड़मेर–इंचलकरंजी
- श्री पुखराजजी सरेमलजी ललवानी, सिवाना–इंचलकरंजी
- श्री सुरेशकुमार हिन्दूमलजी लूणिया, चैन्नई
- श्री हीराचंदजी बबलसा गुलेच्छा – टिंडीवनम–चैन्नई
- श्री भीखचंदजी सुमेरमलजी ललवानी, सिवाना–इचलकरंजी
- शा. डूंगरचंदजी यशकुमारजी ललवानी, सिवाना–चैन्नई
- श्री बाबूलालजी कन्हैयालालजी भूरचंदजी मालू, हरसाणी–इचलकरंजी
- श्री मुन्नीलालजी, जयरूपजी नागोत्रा सोलंकी, बालवाड़ा
- श्री प्रकाशचंदजी चौपड़ा – हैदराबाद
- श्री रिषभलाल मांगीलालजी छाजेड़ – इंचलकरंजी
- श्री जगदीशचन्द, देवीचन्दजी, भंसाली, बाड़मेर–पाली
- श्री शंकरलाल केशरीमलजी धारीवाल, बाड़मेर
- शा. मोहनलालजी किरण दिनेश प्रवीण पुत्र पौत्र शा. बस्तीमलजी, मांडवला
- श्री बाबूलाल भगवानदास बोथरा, बाड़मेर
- श्री जसराज आनन्दकुमार चौपड़ा, जयपुर
- श्रीमती जतनदेवी सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, हावड़ा
- स्व. श्री उत्तमराज पारसकंवर सिंघवी, विजयनगर
- स्व. श्री भीमराजजी बादरमलजी छाजेड़ परिवार, सिवाना–पूना
- श्री मोहनलालजी हरखचंदजी गुलेच्छा, विजयवाड़ा
- श्री रतनचंदजी उत्तमचंदजी चौपड़ा, हैदराबाद
- श्री दिलिपकुमारजी जांवतराजजी श्रीश्रीमाल, सांचौर–मुंबई
- श्री माणकचंदजी छाजेड़, सिवाना–हैदराबाद
- श्री पन्नालालजी, महेन्द्रसिंहजी, गौतमकुमारजी नाहटा, कोलकात्ता – दिल्ली
- श्री पी. एच. साह, बैंगलोर
- श्री बाबुलालजी सुमेरमलजी, मुंबई
- शा. हरकचन्दजी समरथमलजी, चैन्नई
- श्रीमती सुआदेवी उदयचंदजी नाथाजी, जीवाणा–मुंबई
- श्रीमती मायादेवी की स्मृति में पुत्र विनोद शर्मा पुत्र श्री घनश्याम प्रसाद शर्मा, सोमपुरा, आगरा
- श्री जितेन्द्र केशरीमलजी सिंघवी, मुंबई
- श्री रमेश सागरमलजी सियाल, मुंबई
- श्री सुमेरमलजी पुखराजजी बोथरा, सांचौर–हैदराबाद
- श्री गौतम डी. भंसाली, मुंबई
- शा. सागरमलजी फूलचंदजी सियाल, मुंबई
- श्रीमती मथरीदेवी शांतिलालजी वाघेला, मुंबई
- श्रीमती शांतिदेवी जुगराजजी पंचाणमलजी मरडिया, चितलवाना (कारोला) – मुंबई
- शा. जावंतराजजी भीमराजजी मोहनलालजी गांधी, चितलवाना
- शा. प्रकाशचंदजी विजयचंदजी लोढ़ा, जयपुर
- श्री विनोदकुमारजी पारख, बैंगलोर
- श्री जगदीशकुमार खेताजी सुथार, कोलीवाड़ा
- श्री नेमीचंदजी राजेशकुमारजी कटारिया, चैन्नई
- शिल्पी श्रवणकुमार सुरताजी प्रजापति, गोदावरी मार्बल, पिण्डवाड़ा
- श्री मोहनलालजी केवलचंदजी छाजेड़, मुंबई

–श्र ीग ेदमल,प ुखराजजीच ौपड़ा,उ ज्जैन
– श्रीर तनचन्द,ज यकुमार,ि जनेन्द्रकुमारजीच ौपड़ा,उ ज्जैन
– श्री कन्हैयालालजी, मुकेश कुमारजी, सोमपुरा, लुणावा (पाली)
– श्रीध ावलचन्दजी,छ गनलालजीब ोथरा,स ांचोर
– श्रीप ारसमलजी,ह जारीमलजी,ब ोहरा,स ांचोर
– श्रीच ुन्नीलालजी,म फतलालजीम रड़िया,स ांचोर–सूरत
– श्रीज सराज,र ाणुलालजीक ोचर,अ क्कलकुआ
– श्रीम ेघराजजी,त ेजमलजील लवानी,अ क्कलकुआ
– श्रीग ौतमचन्दजीर ाजमलजीड ूंगरवाल,द ेवड़ा–सूरत
– श्रीम ांगीलालजीअ ासुलालजीम ालू,ब ाड़मेर–सूरत
– श्रीप ुष्यपालजीअ निलजीस ुनीलजी,स ुराणा–इन्दौर
– शा.प ीरचंदब ाबुलालए ण्डक ं.,ब ाड़मेर–इचलकरंजी
– शा.ज ुगराजजीि मश्रीमलजीत लावट,उ म्मेदाबाद–सेलम

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

जटाशंकर

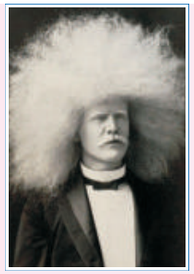

जेल की सजा काटकर जब जटाशंकर बाहर आया तो उसके मित्र घटाशंकर ने उससे पूछा- क्या हुआ था! जेल क्यों गये! ऐसा क्या काम किया, जो तुम्हें जेल जाना पडा! चोरी की थी क्या! चोरी करते पकडे गये क्या!

- ना ना! जुकाम के कारण पकडा गया!

- जुकाम के कारण! बात कुछ समझ में नहीं आई। सर्दी जुकाम होना तो कोई अपराध नहीं है, जिसके कारण जेल जाना पडे।

- अरे! मेरी बात तो सुन! हुआ ऐसा कि मैं एक घर में चोरी कर रहा था। तिजोरी तोड चुका था। उसे साफ कर चुका था। मैं पोटला बांध कर भागने की तैयारी में ही था कि जुकाम के कारण छींक आ गई। उसे रोकने की बहुत कोशिष की, पर जुकाम इतना खतरनाक था कि रोक नहीं पाया। जोर से आई उस छींक के कारण घर वाले जाग गये। और मैं अपने कदम बाहर रखूं, उससे पहले उन्होंने मुझे पकड लिया।

यदि मुझे जुकाम नहीं होता, तो न तो छींक आती, न मैं पकडा जाता और न मुझे जेल जाना पडता!

हम भी ऐसा ही करते हैं। सजा का कारण चोरी है, पर वह जुकाम को जिम्मेदार ठहरा रहा था। ऐसे ही दुःख, पीडा और अपमान का कारण वे कर्म हैं, जिन्हें मैंने ही हँसते हँसते राग द्वेष के कारण बांधे हैं। पर मैं यह नहीं समझ पाता और निमित्त को जिम्मेदार ठहराता हूँ।

एक मशहूर समाचार पत्र में छपने वाले

साप्ताहिक भविष्यफल की बानगी

प्रथम सप्ताह :-

इस हफ्ते आपके जीवन में कोई अनोखी खुशी दस्तक देने वाली है। अचानक धनप्राप्ति के भी योग बन रहे हैं। पूरा सप्ताह मौजमस्ती में गुजरेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

द्वितीय सप्ताह :-

इस सप्ताह आप एक नई और अद्‌भुत शक्ति अपने भीतर महसूस करेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखने से शत्रुपक्ष की पराजय सुनिश्चित है। प्रेम के मामले में भाग्यशाली रहेंगे।

तृतीय सप्ताह :-

रोमांस के लिए यह समय आपके लिए शुभ रहेगा। इस हफ्ते कोई सुंदरी आपके जीवन में प्रवेश करने वाली है। इस सुंदरी का सानिध्य आपके लिए सफलताओं के नए द्वार खोल सकता है।

चतुर्थ सप्ताह :-

इस समय आप स्वयं को ठगा-सा महसूस करेंगे। आपको अचानक आभास होगा कि कोई लगातार पिछले तीन सप्ताह से आपको बेवकूफ बना रहा है।

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2012- 2014 Date of Posting 7th

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in www. jahajmandir.com www.jahajmandir.blogspot.in

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408